ग्रामीण हिन्दी

अर्थात्

आधुनिक हिन्दी की ग्रामीण बोलियों, पड़ोस की बोलियों, तथा मुख्य साहित्यिक रूपों के नमूने-परिचय, मानचित्र तथा व्याकरण की तालिकाओं सहित

संग्रहकर्त्ता

धीरेन्द्र वर्मा

प्रकाशक

साहित्य-भवन लिमिटेड

प्रयाग

१९३३

प्रकाशक:—
साहित्य-भवन लिमिटेड
प्रयाग

मुद्रक:—
बाबू शारदाप्रसाद खरे,
हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।

वक्तव्य

हिन्दी की ग्रामीण बोलियों का परिचय प्राप्त कराने के लिये हिन्दी में कोई भी उपयुक्त पुस्तक नहीं है। ग्रियर्सन द्वारा संपादित 'भारतीय भाषा सर्वे' की जिल्दों में इस तरह की प्रचुर सामग्री संगृहीत है किन्तु ये जिल्दें सर्व साधारण के लिये सुलभ नहीं हैं। इसी त्रुटि को दूर करने के निमित्त प्रस्तुत संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पुस्तक की भूमिका की सामग्री तथा अधिकांश बोलियों के नमूने 'भारतीय भाषा सर्वे' से लिये गये हैं। 'भारतीय भाषा सर्वे' की जिल्दों से बोलियों के नमूने उद्धृत करने की अनुमति देने के लिये मैं भारत सरकार का आभारी हूँ। शेष नमूने एकत्रित करने में मुझे अपने शिष्यों, मित्रों, तथा हिन्दी उर्दू विद्वानों की कुछ प्रकाशित पुस्तकों से सहायता मिली है अतः ये सब धन्यवाद के पात्र हैं। इन सब के नामों का उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है। जिन नमूनों में नामों का उल्लेख नहीं है वे 'भाषासर्वे' से लिये गये हैं।

परिचय में हिन्दी तथा हिन्दी की बोलियों का

संक्षिप्त वर्णन है। उसके बाद ग्रामीण हिन्दी के नमूने दिये गये हैं। तदनन्तर साहित्यिक खड़ी बोली के भिन्नभिन्न रूपों के नमूने तथा हिन्दी-उर्दू को साहित्यिक भाषा मानने वाले बिहार, राजस्थान आदि अन्य प्रदेशों की बोलियों के नमूने दिये गये हैं। परिशिष्ट में हिन्दी की मुख्य मुख्य बोलियों के व्याकरणों की तालिकायें दी गई हैं। इससे बोलियों के भेदों को समझने में सहायता मिल सकेगी। विश्वास है प्रस्तुत पुस्तक हिन्दी के अनेक रूपों का ठीक ठीक बोध कराने में सहायक होगी।

अधिकांश ग्रामीण नमूने रोचक कहानियों के रूप में हैं अतः भाषा संबंधी ज्ञान के साथ साथ पुस्तक से साहित्यिक आनन्द भी प्राप्त हो सकेगा। पुस्तक के आरंभ में एक मानचित्र भी दिया गया है। इससे भिन्न भिन्न बोलियों के क्षेत्रों को समझने में विशेष सहायता मिलेगी।

जनवरी १९३३
विश्वविद्यालय, प्रयाग।

धीरेन्द्र वर्मा

विषय सूची

वक्तव्य — क

विषय सूची — ग

मानचित्र

परिचय — ३

ग्रामीण हिन्दी

१—खड़ी बोली

क. बिजनौर ज़िला — ३१

ख. मेरठ ज़िला — ३६

२—बांगरू : झींद रियासत — ३९

३—ब्रजभाषा

क. मथुरा के चौबे — ४२

ख. एटा ज़िला — ४८

४—कनौजी

क. कनौज — ५०

ख. कानपुर ज़िला — ५१

५—बुंदेली

क. झांसी ज़िला — ५५

ख. ओरछा रियासत — ५७

६—अवधी

क. प्रतापगढ़ ज़िला : पूर्व — ६०
ख. प्रतापगढ़ ज़िला : पश्चिम — ६२

७—बघेली : मांडला ज़िला — ६३
८—छत्तीसगढ़ी : बिलासपुर ज़िला — ६८
९—भोजपुरी : गोरखपुर ज़िला — ७२

साहित्यिक खड़ी बोली

क. साहित्यिक उर्दू : क्लिष्ट — ७५
ख. साहित्यिक उर्दू : साधारण — ७८
ग. बेगमाती उर्दू : लखनऊ — ८०
घ. साहित्यिक हिन्दी : क्लिष्ट — ८२
ङ. साहित्यिक हिन्दी : साधारण — ८४
च. साहित्यिक हिन्दी : हिन्दुस्तानी के निकट — ८५
छ. साहित्यिक हिन्दुस्तानी — ८७

हिन्दी उर्दू को साहित्यिक भाषा के रूप में अपनाने वाले अन्य प्रदेशों की बोलियाँ

१—बिहार की बोलियाँ

क. मगही (गया) — ९१
ख. मैथिली (दक्षिण दर्भंगा) — ९२

२—राजस्थान की बोलियां
क. मारवाड़ी (अजमेर) ९४
ख. जयपुरी (जयपुर राज्य) ९५
ग. मालवी (झबुआ राज्य) ९६
३—पहाड़ की बोलियाँ
क. कुमायूंनी (अल्मोड़ा) ९९
ख. गढ़वाली (पौड़ी) १०१
४—पंजाब : पंजाबी (नाभा राज्य) १०४

परिशिष्ट

हिन्दी की मुख्य मुख्य बोलियों के
व्याकरणों की तालिकायें १०७

परिचय

क—हिन्दी

संस्कृत की स ध्वनि फ़ारसी में ह के रूप में पायी जाती है अतः संस्कृत के 'सिंधु' और 'सिंधी' शब्दों के फ़ारसी रूप 'हिंद' और 'हिंदी' हो जाते हैं।

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

प्रयोग तथा रूप की दृष्टि से 'हिंदवी' या 'हिंदी' शब्द फारसी भाषा का ही है। संस्कृत अथवा आधुनिक भारतीय भाषाओं के किसी भी प्राचीन ग्रंथ में इसका व्यवहार नहीं किया गया है। फ़ारसी में 'हिंदी' का शब्दार्थ 'हिंद से सम्बन्ध रखनेवाला' है किंतु इसका प्रयोग 'हिंद के रहनेवाले' अथवा 'हिंद की भाषा' के अर्थ में होता रहा है। 'हिंदी' शब्द के अतिरिक्त 'हिंदू' शब्द भी फ़ारसी से ही आया है। फ़ारसी में 'हिंदू' शब्द का व्यवहार 'इस्लाम धर्म्म के न मानने वाले हिन्द-वासी' के अर्थ

में प्रायः मिलता है। इसी अर्थ के साथ यह शब्द भी अपने देश में प्रचलित हो गया है।

हिन्दी भाषा का प्रचलित अर्थ तथा प्रभाव का क्षेत्र

शब्दार्थ की दृष्टि से 'हिंदी' शब्द का प्रयोग हिंद अर्थात् भारत में बोले जाने वाली किसी भी आर्य, द्राविड़ अथवा अन्य कुल की भाषा के लिए हो सकता है किंतु आजकल वास्तव में इसका व्यवहार उत्तरभारत के मध्यभाग के हिंदुओं की वर्त्तमान साहित्यिक भाषा के अर्थ में मुख्यतया, तथा वर्त्तमान साहित्यिक भाषा के साथ साथ इस भूमिभाग की समस्त बोलियों और उनसे संबंध रखने वाले प्राचीन साहित्यिक रूपों के लिये साधारणतया होता है। इस भूमिभाग की सीमायें पश्चिम में जैसलमीर, उत्तर पश्चिम में अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी छोर तक के पहाड़ी प्रदेश का दक्षिणी भाग, पूरब में भागलपुर, दक्षिण पूरब में रायपुर तथा दक्षिण पश्चिम में खँडवा तक पहुँचती हैं। इस भूमि भाग में

हिंदुओं के आधुनिक साहित्य और पत्र पत्रिकाओं तथा शिष्ट बोलचाल और स्कूली शिक्षा की भाषा एक है। साधारणतया 'हिंदी' शब्द का प्रयोग जनता में इसी साहित्यिक खड़ी बोली हिन्दी भाषा के अर्थ में किया जाता है किंतु साथ ही इस भूमिभाग की ग्रामीण बोलियों जैसे मारवाड़ी, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, मैथिली आदि को तथा प्राचीन ब्रज, अवधी आदि साहित्यिक भाषाओं को भी हिंदी भाषा के ही अंतर्गत माना जाता है। हिंदी शब्द का यह प्रचलित अर्थ है। इस प्रकार से हिंदी को साहित्यिक भाषा मानने वाले प्रदेश की जनसंख्या लगभग १० करोड़ है।

भाषा शास्त्र की दृष्टि से हिन्दीभाषा का अर्थ तथा क्षेत्र

भाषा-शास्त्र की दृष्टि से ऊपर दिये हुए भूमिभाग में तीन चार भाषायें मानी जाती हैं। राजस्थान की बोलियों के समुदाय को 'राजस्थानी भाषा' के नाम से पृथक् भाषा माना गया है।

बिहार में मिथिला और पटना-गया की बोलियों तथा संयुक्तप्रांत में बनारस-गोरखपुर

कमिश्नरियों की बोलियों के समूह को एक भिन्न 'बिहारी भाषा' माना जाता है। उत्तर के पहाड़ी प्रदेशों की बोलियाँ भी 'पहाड़ी भाषाओं' के नाम से पृथक् मानी जाती हैं। इस तरह से भाषा शास्त्र के सूक्ष्म भेदों की दृष्टि से 'हिंदी-भाषा' की सीमायें निम्न लिखित रह जाती हैं:—उत्तर में तराई, पश्चिम में पंजाब के अम्बाला और हिसार के ज़िले तथा पूरब में फ़ैज़ाबाद, प्रतापगढ़ और इलाहाबाद के ज़िले; दक्षिण की सीमा में कोई परिवर्तन नहीं होता और रायपुर तथा खंडवा पर ही यह जा कर ठहरती है। इस दृष्टि से हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग ४ करोड़ रह जाती है। इस भूमिभाग में हिंदी के दो उपरूप माने जाते हैं जो पश्चिमी और पूर्वी हिंदी के नाम से पुकारे जाते हैं। भाषा-शास्त्र से संबंध रखने वाले ग्रंथों में 'हिंदी भाषा' शब्द का प्रयोग इसी भूमिभाग की बोलियों तथा उनकी आधारभूत साहित्यिक भाषाओं के अर्थ में होता है। इस पुस्तक में भी वर्तमान शास्त्रीय वर्गीकरण के अनुसार इसी अर्थ में हिंदी

शब्द का प्रयोग किया गया है। अंतर केवल इतना है कि शास्त्रीय दृष्टि से बिहारी भाषा के अंतर्गत समझी जाने वाली बनारस-गोरखपुर की भोजपुरी बोली का वर्णन भी हिंदी की बोलियों के साथ ही कर दिया गया है।

हिंदी शब्द के शब्दार्थ, प्रचलित अर्थ, तथा शास्त्रीय अर्थ के भेद को 'हिंदीभाषा' के प्रत्येक विद्यार्थी को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये। साहित्य में इस शब्द का प्रयोग चाहे किसी अर्थ में किया जाय किंतु भाषा से संबंध रखने वाले ग्रंथों में इस शब्द का प्रयोग आधुनिक वैज्ञानिक खोज के अनुसार दिये गये अर्थ में ही करना उचित होगा।

ख--खड़ीबोली हिन्दी के साहित्यिक रूपान्तर--हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी

खड़ीबोली हिन्दी

इस पुस्तक में खड़ीबोली शब्द का प्रयोग मेरठ-बिजनौर के आस पास बोली जाने वाली गांव की भाषा के अर्थ में किया गया है। भाषा सर्वे में ग्रियर्सन महोदय ने इस बोली को 'वर्नाक्युलर हिन्दुस्तानी'

नाम दिया है किन्तु खड़ी बोली नाम बेहतर है। कभी कभी ब्रजभाषा तथा अवधी आदि प्राचीन साहित्यिक भाषाओं के मुक़ाबले में आधुनिक साहित्यिक हिन्दी को भी खड़ीबोली नाम से पुकारा जाता है।[1] साहित्यिक अर्थ में प्रयुक्त खड़ीबोली शब्द तथा भाषाशास्त्र की दृष्टि से प्रयुक्त खड़ीबोली शब्द के इस भेद को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये।

---

१ इस अर्थ में खड़ीबोली का सब से प्रथम प्रयोग लल्लूजी लाल ने प्रेमसागर की भूमिका में किया है। लल्लूजी लाल के ये वाक्य खड़ीबोली शब्द के व्यवहार पर बहुत कुछ प्रकाश डालते हैं अतः ज्यों के त्यों नीचे उद्धृत किये जाते हैं। आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के आदि रूप का भी यह उद्धरण अच्छा नमूना है। लल्लूजी लाल लिखते हैं:—"एक समैं व्यासदेव कृत श्रीमत भागवत के दशमस्कंध की कथा को चतुर्भुज मिश्र ने दोहे चौपाई में ब्रजभाषा किया। सो पाठशाला के लिये श्री महाराजाधिराज, सकल गुणनिधान, पुण्यवान, महाजान मारकुइस वलिजलि

व्रजभाषा की अपेक्षा यह बोली वास्तव में खड़ी खड़ी लगती है कदाचित् इसी कारण इसका नाम खड़ी-बोली पड़ा। हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी इन तीनों रूपों का संबंध इस खड़ीबोली से ही है।

आधुनिक साहित्यिक हिन्दी और उर्दू में साम्य तथा भेद

आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के उस दूसरे साहित्यिक रूप का नाम उर्दू है जिसका व्यवहार उत्तर भारत के समस्त पढ़े लिखे मुसलमानों तथा उनसे अधिक संपर्क में आनेवाले कुछ हिन्दुओं जैसे, पंजाबी, देसी काश्मीरी तथा पुराने कायस्थों आदि में पाया जाता है। भाषा की दृष्टि से इन दोनों

गवरनर जनरल प्रतापी के राज में श्रीयुत गुनगाहक, गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय की आज्ञा से सम्वत १८६० में श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वाले ने बिस का सार ले यामनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ीबोली में कह नाम प्रेमसागर धरा।"

साहित्यिक भाषाओं में विशेष अंतर नहीं है, वास्तव में दोनों का मूलाधार मेरठ-बिजनौर की खड़ीबोली है। अतः जन्म से उर्दू और आधुनिक साहित्यिक हिन्दी सगी बहिनें हैं। विकसित होने पर इन दोनों में जो अंतर हुआ उसे रूपक में यों कह सकते हैं कि एक तो हिन्दुआनी बनी रही और दूसरी ने मुसलमान धर्म ग्रहण कर लिया। साहित्यिक वातावरण, शब्द समूह, तथा लिपि में हिन्दी और उर्दू में आकाश पाताल का भेद है। हिन्दी इन सब बातों के लिये भारत की प्राचीन संस्कृति तथा उसके वर्तमान रूप की ओर देखती है; भारत के वातावरण में उत्पन्न होने और पलने पर भी उर्दू फ़ारस और अरब की सभ्यता और साहित्य से जीवन-श्वास ग्रहण करती है।

उर्दू भाषा का जन्म तथा विकास

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक साहित्यिक हिन्दी की अपेक्षा साहित्यिक उर्दू का जन्म पहले हुआ था। भारतवर्ष में आने पर बहुत दिनों तक मुसल्मानों का केन्द्र देहली रहा अतः फ़ारसी, तुर्की

और अरबी बोलनेवाले मुसल्मानों ने जनता से बातचीत और व्यवहार करने के लिये धीरे धीरे देहली के अड़ोस पड़ोस की बोली सीखी। इस देशी बोली में अपने विदेशी शब्दसमूह को स्वतन्त्रता पूर्वक मिला लेना इनके लिये स्वाभाविक था। इस प्रकार की बोली का व्यवहार सब से प्रथम "उर्दू-ए-मुअल्ला" अर्थात् देहली के महलों के बाहर 'शाही फ़ौजी बाज़ारों' में होता था अतः इसीसे देहली के पड़ोस की बोली के इस विदेशी शब्दों से मिश्रित रूप का नाम 'उर्दू' पड़ा। 'उर्दू' शब्द का अर्थ बाज़ार है। वास्तव में आरम्भ में उर्दू बाज़ारू भाषा थी। शाही दरबार से संपर्क में आनेवाले हिन्दुओं का इसे अपनाना स्वाभाविक था, क्योंकि फ़ारसी-अरबी शब्दों से मिश्रित किन्तु अपने देश की एक बोली में इन भिन्न भाषा-भाषी विदेशियों से बातचीत करने में इन्हें सुविधा रहती होगी। जैसे भारतीय भाषायें बोलनेवाले लोग ईसाई-धर्म ग्रहण कर लेने पर अंग्रेज़ी से अधिक प्रभावित होने लगते हैं उसी तरह मुसल्मान धर्म ग्रहण

करलेने वाले हिन्दुओं में भी फ़ारसी के बाद उर्दू का विशेष आदर होना स्वाभाविक था। धीरे धीरे यह भारतीय मुसल्मान जनता की अपनी भाषा हो गई। शासकों द्वारा अपनाये जाने के कारण यह उत्तर भारत के समस्त शिष्ट समुदाय की भाषा मानी जाने लगी। जिस तरह आजकल पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी के मुँह से 'मुझे चांस (Chance) नहीं मिला' निकलता है, उसी तरह उस समय 'मुझे मौका नहीं मिला' निकला होगा। जनता इसी को 'मुझे औसर नहीं मिला' कहती होगी और अब भी कहती है। बोलचाल की उर्दू का जन्म तथा प्रचार कदाचित् इसी प्रकार हुआ।

एक अंग्रेज विद्वान ग्रैहम बेली महोदय ने उर्दू की उत्पत्ति के संबंध में एक नया विचार रक्खा है। उनकी समझ में उर्दू की उत्पत्ति देहली में खड़ी बोली के आधार पर नहीं हुई बल्कि इससे पहले ही पंजाबी के आधार पर यह लाहौर के आसपास बन चुकी थी और देहली में आनेपर मुसल्मान शासक

इसे अपने साथ ही लाये थे। खड़ी बोली के प्रभाव से इसमें बाद को कुछ परिवर्तन अवश्य हुये किन्तु इसका मूलाधार पंजाबी भाषा को मानना चाहिये खड़ी बोली को नहीं। इस संबंध में बेली महोदय का सब से बड़ा तर्क यह है कि देहली को शासन केन्द्र बनाने के पूर्व १००० से १२०० ईसवी तक लगभग दो सौ वर्ष मुसल्मान पंजाब में रहे। उस समय वहाँ की जनता से संपर्क में आने के लिए इन्होंने कोई न कोई भाषा अवश्य सीखी होगी और यह तत्कालीन पंजाबी ही हो सकती है। यह स्वाभाविक है कि भारत में आगे बढ़ने पर वे इसी भाषा का प्रयोग करते रहे हों। जो हो, बिना पूर्ण खोज के उर्दू की उत्पत्ति के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इस समय सर्वसम्मत मत यही है कि मेरठ-बिजनौर की खड़ीबोली उर्दू तथा आधुनिक साहित्यिक हिंदी दोनों ही की मूलाधार है।

उर्दू का साहित्य में प्रयोग दक्षिण हैदराबाद के मुसल्मानी दरबार से प्रारम्भ हुआ।

उर्दू का साहित्य में प्रयोग

उस समय तक देहली-आगरा के दरबार में साहित्यिक भाषा का स्थान फ़ारसी को मिला हुआ था। साधारण जनसमुदाय की भाषा होने के कारण अपने घर में उर्दू हेय समझी जाती थी। हैदराबाद रियासत की जनता की भाषायें भिन्न द्राविड़ वंश की थीं अतः उनके बीच में यह मुसल्मानी आर्य्यभाषा, शासकों की भाषा होने के कारण, विशेष गौरव की दृष्टि से देखी जाने लगी इसीलिये उसका साहित्य में प्रयोग करना बुरा नहीं समझा गया। औरङ्गाबादी वली उर्दू साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। वली के क़दमों पर ही मुग़ल-काल के उत्तरार्द्ध में देहली और उसके बाद लखनऊ के मुसल्मानी दरबारों में भी उर्दू भाषा में कविता करने वाले कवियों का एक समुदाय बन गया जिसने इस बाज़ारू बोली को साहित्यिक भाषाओं के सिंहासन पर आसीन कर दिया। फ़ारसी शब्दों

के अधिक मिश्रण के कारण कविता में प्रयुक्त उर्दू को 'रेख़्ता' (शब्दार्थ 'मिश्रित') कहते हैं। स्त्रियों की भाषा 'रेख़्ती' कहलाती है। दक्षिणी मुसल्मानों की भाषा 'दक्खिनी' उर्दू कहलाती है। इसमें फ़ारसी शब्द कम इस्तेमाल होते हैं और उत्तरभारत की उर्दू की अपेक्षा यह कम परिमार्जित है। ये सब उर्दू के रूप रूपान्तर हैं। उर्दू भाषा का गद्य में व्यवहार, हिन्दी भाषा के गद्य के समान, अंग्रेज़ों के शासन काल में प्रारम्भ हुआ। मुद्रणकला के साथ इसका प्रचार भी अधिक बढ़ा। उर्दूभाषा अरबी-फ़ारसी अक्षरों में लिखी जाती है। पंजाब तथा संयुक्तप्रांत में कचहरी, तहसील और गाँव में अब भी उर्दू में ही सरकारी काग़ज़ लिखे जाते हैं अतः नौकर पेशा हिन्दुओं को अब भी इसकी जानकारी रखना अनिवार्य है। आगरा-देहली की तरफ़ के हिंदुओं में इसका अधिक प्रचार होना स्वाभाविक है। पंजाबी भाषा में विशेष साहित्य न होने के कारण पंजाबी लोगों ने तो इसे साहित्यिक भाषा की तरह अपना

रक्खा है। हिंदी-भाषा-भाषी प्रदेश में हिंदुओं के बीच में उर्दू का प्रभाव प्रतिदिन कम हो रहा है।

हिन्दुस्तानी

'हिन्दुस्तानी' नाम यूरोपीय लोगों का दिया हुआ है। आधुनिक साहित्यिक-हिन्दी या उर्दू का बोल चाल का रूप 'हिन्दुस्तानी' कहलाता है। केवल बोलचाल में प्रयुक्त होने के कारण इसमें फ़ारसी अथवा संस्कृत शब्दों की भरमार नहीं रहती यद्यपि इसका झुकाव उर्दू की तरफ़ अधिक रहता है। कदाचित् यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि हिन्दुस्तानी उत्तर भारत के पढ़े लिखे लोगों की बोल चाल की उर्दू है। उत्पत्ति की दृष्टि से आधुनिक साहित्यिक हिन्दी तथा उर्दू के समान ही इसका आधार भी खड़ी बोली है। एक तरह से यह हिन्दी-उर्दू की अपेक्षा खड़ी बोली के अधिक निकट है क्योंकि शब्द समूह में यह फारसी-संस्कृत के अस्वाभाविक प्रभाव से बहुत कुछ मुक्त है। दक्षिण के ठेठ द्राविड़ प्रदेशों को छोड़ कर शेष समस्त उत्तर भारत

में हिन्दी-उर्दू का यह व्यवहारिक रूप हर जगह समझ लिया जाता है। कलकत्ता, हैदराबाद, बंबई, करांची, जोधपुर, पेशावर, नागपुर, काश्मीर, लाहौर, देहली, लखनऊ, बनारस, पटना आदि सब जगह हिन्दुस्तानी बोली से काम निकल सकता है। अंतिम चार पांच स्थान तो इसके घर ही हैं।

साधारण श्रेणी के लोगों के लिये लिखे गये साहित्य में हिन्दुस्तानी का ही प्रयोग पाया जाता है। क़िस्से, ग़ज़लों और भजनों आदि की बाज़ारू किताबें हिन्दुस्तानी में ही मिलेगी। अक्सर ऐसी किताबें जो जनसमुदाय को प्रिय हो जाती हैं फ़ारसी और देव-नागरी दोनों लिपियों में छापी जाती हैं। इस ठेठ भाषा मे कुछ साहित्यिक पुरुषों ने भी लिखने का प्रयास किया है। इंशा की 'रानी केतकी की कहानी' तथा पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय का 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'बोलचाल' हिन्दुस्तानी को साहित्यिक भाषा बनाने के प्रयोग हैं जिसमें ये सज्जन सफल नहीं हो सके।

२

ग—हिन्दी की ग्रामीण बोलियां

ऊपर बतलाया जा चुका है कि प्राचीन 'मध्यदेश' की आठ मुख्य बोलियों के समुदाय को भाषाशास्त्र की दृष्टि से हिन्दी नाम से पुकारा जाता है। इनमें से १–खड़ीबोली, २–बांगरू, ३–ब्रज, ४–कनौजी, तथा ५–बुंदेली इन पांच को भाषासर्वे में 'पश्चिमी हिन्दी' नाम दिया गया है तथा १–अवधी, २–बघेली तथा ३–छत्तीसगढ़ी इन शेष तीन को 'पूर्वी हिन्दी' नाम से पुकारा गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से पश्चिमी हिन्दी का संबंध शौरसेनी प्राकृत तथा पूर्वी हिन्दी का संबंध अर्द्ध मागधी प्राकृत से जोड़ा जाता है। भाषासर्वे के आधार पर हिन्दी की इन आठों बोलियों का संक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है। बिहार की ठेठ बोलियों से बहुत कुछ भिन्न होने तथा साथ ही हिन्दी से विशेष घनिष्ठ संबंध होने के कारण बनारस गोरखपुर की भोजपुरी बोली का वर्णन भी हिन्दी की इन आठ बोलियों के साथ ही दे दिया गया है।

खड़ीबोली

खड़ीबोली पश्चिम रोहिलखंड, गंगा के उत्तरी दोआब तथा अम्बाला जिले की बोली है। खड़ीबोली तथा हिन्दी उर्दू आदि का संबंध ऊपर बतलाया जा चुका है। मुसल्मानी प्रभाव के निकटतम होने के कारण ग्रामीण खड़ीबोली में भी फ़ारसी-अरबी के शब्दों का व्यवहार अन्य बोलियों की अपेक्षा अधिक है किन्तु ये प्रायः अर्धतत्सम अथवा तद्भव रूपो में प्रयुक्त किये जाते हैं। इन्हीं को तत्सम रूप में प्रयुक्त करने से खड़ी बोली में उर्दू की झलक आने लगती है। खड़ीबोली निम्नलिखित स्थानों में गाँवों की बोली है:—

रामपुर रियासत, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून के मैदानी भाग, अम्बाला, तथा कलसिया और पटियाला रियासत के पूर्वी भाग।

खड़ीबोली बोलने वालों की संख्या ५३ लाख के लगभग है। इस संबंध में निम्नलिखित यूरोपीय देशों की जनसंख्या के अङ्क रोचक प्रतीत होंगे:—ग्रीस ५४

लाख, बलगेरिया ४९ लाख तथा तीन भाषाय बोलने वाला स्विटज़रलैंड ३९ लाख।

बाँगरू

बांगरू बोली जाटू या हरियानी नाम से भी प्रसिद्ध है। यह देहली, कर्नाल, रोहतक और हिसार ज़िलों और पड़ोस के पटियाला, नाभा और झींद रियासतों के गांवों में बोली जाती है। एक प्रकार से यह पंजाबी और राजस्थानी मिश्रित खड़ी-बोली है। बांगरू बोलने वालों की संख्या लगभग २२ लाख है। बांगरू बोली की पश्चिमी सीमा पर सरस्वती नदी बहती है। हिन्दी भाषाभाषी प्रदेश के प्रसिद्ध युद्धक्षेत्र पानीपत तथा कुरुक्षेत्र इसी बोली की सीमा के अंतर्गत पड़ते हैं अतः इसे हिन्दी की सरहदी बोली मानना अनुचित न होगा।

ब्रजभाषा

प्राचीन हिंदी साहित्य की दृष्टि से ब्रज की बोली की गिनती साहित्यिक भाषाओं में होने लगी इसीलिए आदरार्थ यह ब्रजभाषा कह कर पुकारी जाने

लगा। विशुद्ध रूप मे यह बोली अब भी मथुरा, आगरा, अलीगढ़ तथा धौलपुर में बोली जाती है। गुड़गांव, भरतपुर, करौली तथा ग्वालियर के पश्चिमोत्तर भाग में ब्रजभाषा में राजस्थानी और बुंदेली की कुछ कुछ झलक आने लगती है। बुलंदशहर, बदायूँ और नैनीताल तराई में खड़ीबोली का कुछ प्रभाव शुरू हो जाता है तथा एटा, मैनपुरी और बरेली जिलों में कुछ कनौजीपन आने लगता है। मेरा अपना अनुभव तो यह है कि पीलीभीत तथा इटावा की बोली भी कनौजी की अपेक्षा ब्रजभाषा के अधिक निकट है। ब्रजभाषा बोलने वालों की संख्या लगभग ७९ लाख है। तुलना के लिये नीचे लिखे जनसंख्याओं के अङ्क रोचक प्रतीत होंगे—टर्की ८० लाख, बेलजियम ७७ लाख, हंगरी ७८ लाख, हालैंड ६८ लाख, आस्ट्रीया ६१ लाख तथा पुर्तगाल ६० लाख।

जब से गोकुल वल्लभ संप्रदाय का केन्द्र हुआ तब से ब्रजभाषा में कृष्ण साहित्य लिखा जाने लगा।

धीरे धीरे यह समस्त हिंदी-भाषा-भाषी प्रदेश की साहित्यिक भाषा हो गई। उन्नीसवीं सदी में साहित्य के क्षेत्र में खड़ी बोली ब्रजभाषा की स्थानापन्न हुई।

कनौजी

कनौजी बोली का क्षेत्र ब्रजभाषा और अवधी के बीच में है। कनौजी को पुराने कनौज राज्य की बोली समझना चाहिये। यह ब्रजभाषा से बहुत मिलती जुलती है। कनौजी का केन्द्र फ़रुखाबाद है किन्तु उत्तर में यह हरदोई, शाहजहांपुर तथा पीली-भीत तक और दक्षिण में इटावा तथा कानपुर के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। कनौजी बोलने वालों की संख्या लगभग ४५ लाख है। ब्रजभाषा के पड़ोस में होने के कारण कनौजी साहित्य के क्षेत्र में कभी भी आगे नहीं आ सकी। इस भूमिभाग में प्रसिद्ध कविगण तो कई हुये किंतु इन सब ने ब्रजभाषा में ही अपनी रचनायें कीं।

बुंदेली बुंदेलखंड की बोली है। शुद्धरूप में यह झांसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भूपाल, ओड़छा, सागर, नृसिंहपुर, सिउनी तथा हुशंगाबाद में बोली जाती है। इसके कई मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा छिंदवाड़ा के कुछ भागों में पाये जाते हैं। बुंदेली बोलने वालों की संख्या ६९ लाख के लगभग है। मध्यकाल में बुंदेलखण्ड साहित्य का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है किन्तु यहां होने वाले कवियों ने भी ब्रजभाषा में ही कविता की है यद्यपि इनकी ब्रजभाषा पर बुंदेली बोली का प्रभाव अधिक पाया जाता है।

बुँदेली

हरदोई जिले को छोड़कर अवधी शेष अवध की बोली है। यह लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, खीरी, फ़ैज़ाबाद, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी में तो बोली ही जाती है इसके अतिरिक्त दक्षिण में गङ्गापार इलाहाबाद, और फ़तेह-

अवधी

पुर में तथा कानपुर के कुछ हिस्से में भी बोली जाती है। बिहार के मुसलमान भी अवधी बोलते हैं। यह खिचड़ी वाला भाग मुज़फ्फरपुर तक है। अवधी बोलने वालों की संख्या लगभग १ करोड़ ४८ लाख है। ब्रजभाषा के साथ अवधी में भी कुछ साहित्य लिखा गया था यद्यपि बाद को ब्रजभाषा की प्रतिद्वन्द्विता में यह ठहर न सकी। पद्मावत और रामचरितमानस अवधी के दो सुप्रसिद्ध ग्रंथरत्न हैं।

बघेली

अवधी के दक्षिण में बघेली का क्षेत्र है। इसका केन्द्र रीवाँ राज्य है किन्तु यह मध्य-प्रान्त के दमोह, जबलपुर, मांडला तथा बालाघाट के जिलों तक फैली हुई है। बघेली बोलने वालों की संख्या लगभग ४६ लाख है। जिस तरह बुंदेलखंड के कवियों ने ब्रज-भाषा को अपना रक्खा था उसी तरह रीवाँ के दरबार में बघेली कविगण साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी का आदर करते थे।

छत्तीसगढ़ी — छत्तीसगढ़ी को लरिया या खल्ताही भी कहते हैं। यह मध्यप्रान्त में रायपुर और बिलासपुर के जिलों तथा कांकेर, नदगाँव, खैरगढ़, रायगढ़, कोरिया, सरगुजा, आदि राज्यों में भिन्न भिन्न रूपों में बोली जाती है। छत्तीसगढ़ी बोलनेवालों की संख्या लगभग ३३ लाख है जो डेनमार्क की जनसंख्या के बिलकुल बराबर है। मिश्रित रूपों को मिलाकर बोलने वालों की संख्या ३८ लाख के लगभग हो जाती है जो स्विटजरलैंड की जनसंख्या से टक्कर लेने लगती है। छत्तीसगढ़ी में पुराना साहित्य बिल्कुल भी नहीं है। कुछ नई बाजारू किताबें अवश्य छपी हैं।

भोजपुरी — बिहार के शाहबाद जिले में भोजपुर एक छोटा सा क़स्बा और पर्गना है। इस बोली का नाम इसी स्थान से पड़ा है यद्यपि यह दूर दूर तक बोली जाती है। भोजपुरी बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, ग़ाज़ीपुर, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, शाहाबाद,

चम्पारन, सारन तथा छोटा नागपुर तक फैली पड़ी है। भोजपुरी बोलने वालों की संख्या पूरे २ करोड़ के लगभग है। भोजपुरी में साहित्य कुछ भी नहीं है। संस्कृत का केन्द्र होने के अतिरिक्त काशी हिन्दी का भी प्राचीन केन्द्र रहा है किन्तु भोजपुरी बोली से घिरे रहने पर भी इसका प्रयोग साहित्य में कभी भी विशेष नहीं किया गया। काशी में रहते हुये भी कविगण प्राचीन काल में व्रज तथा अवधी में और आधुनिक काल में आधुनिक साहित्यिक खड़ी बोली हिन्दी में लिखते रहे हैं। भाषा संबंधी कुछ साम्यों को छोड़ कर शेष सब बातों में भोजपुरी प्रदेश बिहार की अपेक्षा हिन्दी प्रदेश के अधिक निकट रहा है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि संयुक्तप्रान्त में चार मुख्य बोलियां बोली जाती हैं अर्थात् मेरठ-बिजनौर की खड़ीबोली, मथुरा-आगरा की व्रजभाषा, लखनऊ-फैजाबाद की अवधी तथा बनारस-गोरखपुर की भोजपुरी। कनौजी व्रजभाषा औरअवधी के बीच की एक पांचवी बोली है। देहली कमिश्नरी की

बांगरू बोली हिन्दी की सरहदी बोली है। संयुक्तप्रान्त की झांसी कमिश्नरी, मालवा को छोड़ कर शेष मध्य-भारत तथा हिन्दुस्तानी मध्यप्रान्त में बुंदेली, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी का क्षेत्र है जिनके केन्द्र क्रम से झांसी, रीवां तथा रायपुर हैं। इन नौ बोलियों का क्षेत्र हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेश है जो भारत के इतिहास में आदि काल से यहां की सभ्यता का केन्द्र रहा है।

हिन्दी की इन नौ ग्रामीण बोलियों, खड़ी बोली के आधुनिक साहित्यिक रूपों तथा पड़ोस की राजस्थानी, पहाड़ी, और बिहारी बोलियों के नमूने प्रस्तुत पुस्तक में दिये गये हैं।

ग्रामीण हिन्दी

ग्रामीण हिन्दी

१—खड़ीबोली

(क) बिजनौर ज़िला

कोइ बादसा था। साब उस्के दो राण्यॉ थीं। एक के तो दो लड़के थे और एक के एक। वो एक रोज अप्नी रान्नी से केने लगा मेरे समान और कोई बादसा है बी? तो बड़ी बोल्ले के राजा तुम समान और कौन होग्गा जेस्सा तुम वेस्सा और कोई नई। छोट्टी सें पुच्छा के तुम बी बतला मुज समान कोई और बी राजा है के नई? कि राज्जा मुज्से मत बुज्झो। केह्या,[1] नई, बतलाणा होग्गा। राणी नें किह्या कि एक बिजाण[2] सहर हे उस्के किल्ले मे जितणी तुम्हारी सारी हैसियत है उत्नी एक इंट

---

1 कहा, 2 अजान,

लगी हे। ओ हो इसने मेरी कुच बात नई रक्खा इसको तग्मार्ती[1] करना चाइये। उस्कू तग्मार्ती कर दिया। ओर बड़ी कू सब राज का मालक कर दिया।

ब्होत दिन बीच गये कुछ दिन बाद लड़कों ने केह्या कि हम उस सहर को देकखणा चाते हैं केम्ना बिजाण सहर हे। बादसा ने दोन्नो कू इक्का घोड़ा ले दिया। लड़के व्हां से ब्होत सा माल खुर्जियों में भर क बेजान सहर कू चल दिये। ब्होत दिन बीच ग्ये खाणा थोड़ा साई रे गेया। एक सराय में ठैरें थे। जब कुच बी खाणा नई मिला तो घोड़े तक बेच दिये। व्हाँ से बिजाण सहर ब्होत दूर था। ब्होत दिन हो गये तब तग्मार्ती का लड़का बोल्ला के मुज कू एक घोड़ा लादे तो भाइय्यों की खबर ले आऊं के बिजाण सहर गेये या नी गेये। वो मजल दर मजल चला जा रिया था। जिस सहर में स्राय थी व्हांई जा पोंचा। लड़के ब्होत तंग हो गेये थे। घास खींच खींच कर गुजारा करे थे।

1 निर्वासित,

उसर्णें भटियारी से क्या केह्या के मेरे घोड़े क वास्ते घास ला। भटियारी ने लड़कों से क्या केह्या कि चलो हमारी सराय में एक बाद्सा जाद्दा आया हवा हे। लड़का दोन्नो घास लेक्कर सराय में आये। उस्कू पता बी चल गेया ता, कि बूज लिय्या था भटि-यारी से कि ये लड़के जा रये थे बिजाण सहर। उसणे बड़ी तवज्जे की, और मिठाई और पकोड़ी खूब मसालेदार उनकू खलाई। सबेरा हवा तब व्हाँ से बिजाण सहर की राह ली। चलते चलते मजल दर मजल बिजान सहर बी आ लिया। व्हाँ क्या देख्ता हे के एक हाली हल जोत रिया हे। हात तो उसका हल में हे बेल वेस्सई सीद्दे खड़े हवे हैं। जो उस्कू अवाज दी तो बोलेई नी, बिजाण। और वो लड़का बिजाण सहर में पोंच लिया हे। देखता क्या हे कि चड़स चल रिया हे बेल ठांडे प खड़े हवे हैं। मालिक चड़स पकड़ रिया है और जो उन्कू अवाज देता हे तो बोल्ले नई, बिजाण। आगे क्या देक्खता हे कि बौत अच्छा बाग हे। तरे तरे की रौस पट्टी

२

पडी हुई हे। फूल लगे हुये हैं। लड़के ने अवाज दी तो माली बोल्ताई नी, विजाण हे।

व्हाँ से चल क लड़का विजाण सहर के किले क करीब ई जा पोंचा। घोडा छोड़ क बादसा जादे ने फाटक से बांध दिया ओर विजाण सहर में चला गेया। देक्ता क्या हे के तमाम सहर विजाण हे। लड़का भूक्खा था हल्वाई की दुकाण कु गेया। लड़के ने हांक मार्‌री तो बोल्लाई नी, विजाण हे। लड़के ने खाणा उठा क खा लिय्या ओर किम्मत दुकाण प रख दी। खाण्णा खा के लड़का व्हाँ से चल दिया। के व्हाँ की बादसाजादी को देक्खणा चइये किस जगे प रेती हे। ओर सोचा किले कि एक ईंट जरूर ले चलना चइये। अक नमूना दिखावे क विजाण सहर गेया था। ओर अटारी प जां बादसा-जादी रेती थी व्हाँ गेया। वो पलंग प सो रई ती। जो हांक मारे तो बोल्ली नी, विजाण। इस्का बी नमूणा कुच ले जाणा चइये। लड़के ने अपना रूमाल ओर गुस्ताना उस्के हाथ में पिन्हा दिया ओर उस्का लेकर

अपणे हाथ में पेन लिया। सब नमूणा ले लिया त व्हाँ से चल देया। उस सहर में कुछ देव रैवे थे। वो महीने दो महीने में उसे जान का कर देवे थे सो वो सहर जान का हो गेया।

_वो दोन्नो लड़के इस्के पेलेई घर पोंच गये ते श्रोर कहा, पिता, बिजाएा सहर हम देख आये। वैसेई झूठमूठ कू बता दिया। फिर जब ये छोटा लड़का पोंचा ओर उस्णे तमाम नमूणा दिखा दिया तब बादसा बड़ा खुस हवा।

फेर जब बादसा-जादी ने रूमाल गुस्ताना देक्खा तो बोली, कै तो उस बादसाजादे से सादी करा दे नई तो मैं बच्चूँगी नाय। उसने पूरा पता बता दिया। बादसा को वो लड़का व्होत प्यारा लगा ओर सब राज का मालक उसेई बना दिया ओर उस्को लाने को चल देया। बिजाएा सहर में सादी कर क उसी सहर का मालक बणा दिया। फेर बादसा ने उस छोटी रानी की बी भोत आबरू की।

(श्री बालकृष्णप्रसाद शुक्ल द्वारा संकलित)

(ख) मेरठ ज़िला

एक दिन अकबर बादसा नें बीरबल तें पुन्छ्या, ओ बीरबल तू हमें बड़द[1] का दूध ला दे ओर नहीं तेरी खाल कढ़वाई जागी। बीरबल कूँ बहोत रंज हुआ ओर हुन्तर[2] आण के अपने घरूँ पड़ रहा।

बीरबल की लोन्डी[3] नें अपणे मन में कहा की आज तो मेरा बाप बहोत सोच में पड़ा हे। आज के जाणे इसका का के ढब हुआ। जिब उन नें अपणे बाप कूँ पुन्छ्या, अरे बाप आज तेरा के ढब हे। बीरबल नें कहा की बेटी कुछ ना हे। फेर लोन्डी नें पुन्छ्या की पिता अपणे मन का भेद बताणा चाहये। जिब उननें कहा की बादसा नें कहा की के तो बड़द का दूध ला दे नहीं तम्हें कोल्हू में पिलवाऊँगा। मेरं तें कुछ नहीं कहा गया ओर हाम्भी भर के आया हूँ ओर कुछ राह नहीं पाता। लोन्डी नें कहा की पिता

१—बैल, २—वहाँ से, ३—लड़की,

जी था तो कुछ भी बात नाँ हे । तुम बे फिकर रहो । बीरबल उठ खड़ा हुआ ।

खेर, जिब तड़का हुआ तो उस लोन्डी नें के काम करा की अपणा सब सिंगार करा ओर बहोत अच्छी पुसाक पहर के ओर कुछ कपड़े हाथ में ले के बादसा के किले के आगे कूँ लिकड़[1] जमना पर गई । बादसा किले पे चढ़ के जमना की सेल कर रहे थे । अकबर नें देखा की बीरबल की लोन्डी लत्ते धो रही हे । बादसा नें लोन्डी तें पुच्छा की ए लोन्डी आज क्यों तड़के ही तड़के लत्ते धोवण आई हे । जिब उस लोन्डी नें कहा की बादसा आज मेरे बाप के लड़का हुआ हें । बादसा नें छोह[2] में आ के कहा अरी लोन्डी भला कहीं मरदूँ के भी लोन्डे होते सुणे हें । लोन्डी ने कहा की बादसा भला कहीं बड़द के भी दूध होता सुणा हे । जिब बादसा कूँ कुछ बोल नहीं आया ओर लोन्डी कूँ कह दिया की तड़के ही तड़के बीरबल कूँ कचहड़ी में भेज-दे ।

१—निकल, २—क्रोध

बीरबल तड़के ही कचहड़ी में गया। बादसा न पुच्छा की बीरबल लाया बड़द का दूध। बीरबल नें कहा क बादसा सलामत में तो कल तड़के ही लोन्डी के हाथ भेज दिया था। बादसा-कूँ कुछ बोल न आया।

२—बाँगरू

झींद रियासत

एक बाह्मण था अर एक बाह्मणी थी। बाह्मण चून मैंग-कै[1] लि आया करदा[2]। बाह्मणी कैहण लाग्गी इस नगरी मैं राज्जा भोज सै। यू सलोक[3] कौहा कै बाह्मणाँ नै एक टका सिओने[4] का दे सै[5]। इस राज्जा कै तैाँ भी जा कै कह दे। बाह्मण कैहण लाग्या मैं सलोक नी[6] जाणदा। बाह्मणी कैहण लाग्गी सलोक तन्नै मैं सिख्या दींगी। फेर उन बाह्मणी नै सलोक सिख्या दिया, अक पैस्सा गाँठ मैं।

राज्जा भोज नै सै रोपया उस नै निश्राम[7] के दे दिया। बाह्मण तो अपणे घराँ चाल्ल्या आया।

राज्जा भोज एक खूर्जी रोपया की भर कै सैल मैं चाल पड़्या। चाल्ल्या चाल्ल्या अपणी सुसराड़

१—मांग के, २—करता, ३—श्लोक, ४—सोने, ५—देता है, ६—नहीं, ७—इनाम

बिग गया[1]। राज्जा भोज नै एक ल्हवाई की हाट पर डेरा कर दिया। ल्हवाई नै उस की खात्तर कर दे बार[3] हो गई। ल्हवाई रोज की रोज राज्जा भोज की रानी की महल मैं जाया करदा। ल्हवाई रानी खात्तर लाड्डू ले जाया करदा। उ दन तवल मैं ओह लाड्डू भूला गया। ल्हवाई जद कमन्द पर चढण लाग्या राज्जा भोज नै थाप्पी[4], अक तैं भी देख तो, के गियान सै। राज्जा की छोहरी[5] कैहण लाग्गी लाड्डू लि आया। ल्हवाई कैहण लाग्या लाड्डू भूल आया। राज्जा की बेट्टी ले कै कोरड़ा ल्हवाई नै पिट्टण मैंद गई[6]।

राज्जा भोज के पल्ले मैं चार लाड्डू बंध रे थे। राज्जा भोज नै ओह साफा झरोखे मैं बगा-कै[7] मारा। राज्जा की बेट्टी कैहण लाग्गी यिह लाड्डू कड़ै[8] लाह आए। ल्हवाई कैहण लाग्या लाड्डू राम ने दए

१—पहुँचा, २—देर, ३—जल्दी, ४—निश्चय किया, ५—लड़की, ६—पीटने लगी, ७—फेंक कर, ८—कहां से

सैं। फेर वाह् राज्जा की बेट्टी लाड्डू खाण लाग्गी अर कैह्ण लाग्गी ल्हवाई ईसी लाड्डू मैं अपणे सासरे मैं बिआह् ले गई जूँहीं[1] खाए थे। तेरे को बटेऊ[2] आ रह्या-सै। ल्हवाई कैह्ण लाग्ग्या, एक बटेऊ मेरे घोड़े आला[3] आ रह्या-सै। वाह् राज्जा की बेट्टी कैह्ण लाग्गी, तन्नै चार सै रोपया द्यांगी उस बटेऊ नै मरवा दे।

ल्हवाई उतर कै चार जाल्लाद्दां नै बला के लिआया, अक भाई चार सै रोपया लेओ। इस बटेऊ नै रमाणै में[4] जा कै मार देओ। चार जाल्लाद्दां नै औह् राज्जा भोज पकड़ लिया। राज्जा भोज कैह्ण लाग्ग्या, भाई तम मेरा के करोगे। जाल्लाद बोल्लै, हमें तन्नै जी तै[5] मारांगे। राज्जा पुच्छण लाग्ग्या, जी तै मारे तन्नै के थियावैगा[6]। जाल्लाद बोल्लै, भाई चार सै रोपया थियावैंगे। राज्जा बोल्ल्या, भाई

१—तब, २—बटोही, ३—घोड़े वाला, ४—जंगल में, ५—जान से, ६—तुम्हारा क्या लाभ होगा

तम नै रोपया पान सै दिस्रौंगा, जी तै ना मारो। थारे शहर मैं; जिऊँदा नाहीं बड़ूँगा[1]।

राज्जा भोज कै बाह्मण वाला सलोक सात्त[2] आ गिया। अक पैस्सा गाँठ मैं था, जो जी बच गया।

१—आऊँगा, २—सत्य

३—ब्रजभाषा

(क) मथुरा के चौवे

एक मथुरा जी के चौवे हे[१], जो डिल्ली सैहर[२] कौ चले। तौ पैंलें[३] रेल तौ ही[४] नईं, पैदल रस्ता ही। तौ एक डिल्ली को जो बनिया हो सो माल लैकै आयो वेचिवे कौं। जब माल बिक गयौ, जब स्वाली गाडियै लैकै डिल्ली कौ चलौ[५]। जो सैर के किनारें आयौ सो चौवे जी सै भेंट है गई। तौ वे चौवे बोले गाड़ी वारे सै, अरे भइया सेठ, कहाँ जायगो कहां की गाड़ी है? । वौ बोलो, महाराज मेरी डिल्ली की गाड़ी है और डिल्ली जाउँगो। तौ चौवे बोले, भइया हमऊं बैठालेय। बनिया बोलो, चार रुपा लागिंगे भाड़े के। चौवे बोले, अच्छौ भइया चारौ दिंगे।

१—थे, २—शहर, ३—पहले, ४—थी, ५—चला

अब चौबे चुप बैठ गये। तौ बनिया बोलो, 'महाराज कुछ बात कहौ जाते रस्ता कटे'। तौ बे चौबे जी बोले, 'हमारी एक बात एक रुपा की है'। वा ने कई, 'अच्छो महाराज मैं दुंगो'। तौ कई, 'पैली बात तौ हमारी एई है कि

'सब पञ्चन मिल कीजै काज
हारे जीते आवै न लाज।'

याय सुनिकै बनियौ बोलौ, 'महाराज, मोय तौ कछु या मैं मजा न आयौ तुम नै एक रुपा छुड़ाय लियौ। कई, रुपा की बात तौ इतनी होय है, फिर तोय सेंत मेंत[1] की सुनामेंगे। तौ कई, महाराज और कुछ कओ। तौ कओ, सेठ, तेरो एक तौ चुको अब दूसरे रुपा की कएं ? सू दूसरी बिन्नैं बात कई कि

'औघट घाट नहियै'।

कई, 'मोय मजा न आयौ'। कई, 'जिजमान, मजा की फ़िर सुनामेंगे, तेरो भाड़ो तौ पूरो कर दें'। कई, महाराज अब तीसरी बात कओ। तौ कई,

१—मुफ़्त में, २—कही

तोसरी बात जे है कि 'घर में इस्त्री तैं सांच न कहे'। कई, महाराज चौथिओ कै देओ। कई, 'कछु कसूर बन जाय तौ सांच कहे, सांचकौ आँच कहूं नायं'। कही, जिजमान तेरो भाड़ो तौ चुक गयो अब तोय सेंतमेंत सुनावत चलैं। फिर बाय रङ्गबिरङ्गी बातैं सुनावत भए डिल्ली के किनारे तक पौंच गए।

जब डिल्ली द्वै कोस रै[1] गई तब जिजमान को गांव आयौ। सो चौबे जी तौ उतर पड़े। जब कोस भर अगाड़ी और चलो तौ एक गांव और आयौ मां तै[2] डिल्ली कोस भर रै गई। वा गांउ में कैसी भई कि एक साधू मर गओ। तौ गांउ वालिन नै कही बिचार कियौ कि या कौं जमुना जी मैं फिकवाय देयं तौ याकी मोच्छ है जाय। तौ सब लोग या पैंड़े[3] मैं ठाड़े कि कोई खाली गाड़ी आय जाय तौ याय डिल्ल भिजवाय देअं। इतनेई मैं जा बनिये की गाड़ी चली आई। तौ गांउ वाले आदमी बोले कि तेरी खाली तौ गाड़ी हैयै, तू या साधू को लै जा, याकी मोच्छ है

१—रह, २—वहाँसे, ३—प्रतीक्षा

जायगी। वौ वनिया बोलो, मैं ऐसे इल्जाम वाले मुर्दा कौ नई पटकौं। गांउ वाले बोले, तोयबड़ो पुन्न होयगो। इल्जाम की कहा बात है।

तौ मोयं (बनिये को) चौबे जी की बात याद आई 'सब पंचन मिल कीजै काज, हारे जीते आवै न लाज'। तौ मैंनें वाकौ बैठाल्लियौ, मेरो कहा बिगडै गो, धर्म को मामलो है। जब मैं बाय लैकै चलो तौ मोय दूसरी बात याद आई चौबे जी की कि, 'औघट घाट नहियै'। तो मै वाय औघट घाट लै गओ जां कोई देखै नायं। तौ मैं बाय उठाऊं तौ उठै नायं, मरे मैं तौ बड़ो बोझ है जाय। सो मैंनें हात पांय पकड़ कै खैंचौ जो वाकी धोती खुल गई। धोती के खुलत खन[1] सौ असर्फी निकरीं। जो मैं नई लाउतो तौ कां से निकर्तीं और चौगान कै घाट पै लै जातो तौ सब कोई देखतो। वां काऊ नै नई देखौ। अब मैंने साधू कौ तौ घसीट कै जमुना जी मैं फेंक दियौ और गाड़ी धोय लीनी और जल्दी के मारे असर्फी

1—खुलते ही

की बासनी[1] भूल कै चल दियौ। जब थोड़ी दूर आयौ तौ याद आई कि बासनी तौ ह्वांई भूल आयौ। लौट कै आयौ तौ देखौं तौ ह्वांई धरी। अब मैं बड़ो खुसी होत भयौ घर आयौ।

अब घर मैं आयौ तौ रात मैं लुगाई सै बात भई तौ लुगाई[2] से सांच कै दीनी। सबेरे मैं तौ दुकान पै चलो गयौ और लुगाई से पार पड़ोस मैं बात भई तौ वानैं कै दीनी कि मेरो धनी[3] एक साधू की सौ असर्फी लायौ है। सो वा बात फैलत फैलत बास्साह के पास जाय पौंची। सो बास्सा नैं सेठ कौ पकड़ि बुलायौ। अब सेठ काँपज्जाय[4] और जात जाय। अब जौ चौबे जी की चौथी बांत सांची होयगी तौ बच कै आउँगो। बास्साय कै सामनैं हाजिर भयौ। बास्साह बोलो, ऐ रे बनिया तू कहां से लाया सच कहेगा तौ छोड़ दिया जायगा नहीं तौ मारा जायगा। बनिया बोलो, हजूर मैं सच कहूँगो आप जो चायं[5]

१—कमर में लपेटने को थैली, २—स्त्री, ३—पति, ४—काँपता जाय, ५—चाहें

सो करैं। वानै सगरी[1] कथा कई और कई कि मैं काऊ कौ मार कै नईं लायौ, हज़ूर मोयं तौ चौबे जी की बात को फल मिल्यौ अब आप हज़ूर मालिक हैं। बास्सा बोले, तैं नें सच कह दिया जा तेरी मा का दूध है, ले, जा।

(खिलन्दर चौबे)

(ख) एटा ज़िला

एक ठाकुर हो[2]। बा नें एक कोरिया कूँ बेगार में पकरो और अपनी घुड़ियाके संग बाइ लिवाइ के अपनी सुसरार कूँ चलो। तब कोरिया की मैतारी[3] नें कही कि बेटा जब ठाकुरू खुसी होँ तब अढ़ाई सेर रुई माँग लीये। कोरिया ठाकुरु के संग चल भयो।

जब ठाकुरु सुसरार में भीतर गओ, कोरिया कूँ अपनी घुड़िया थमाय गओ और जताइ गओ कि जाइ चोट्टा[4] न लै जामें। आधी रात भयें कोरिया सोइ गओ। घुड़िया चोर ले-गये। धौतायें[5] बा नें

१—संपूर्ण, २—था, ३—माता, ४—चोर, ५—सुबह

देखो तो घुड़िया न पाई। लगाम लै कें अटरिया में जा जग्गै[1] ठाकुरु सोवत हे पोंचो और कही कि, ओ ठाकुस सा 'अटलन-खुनखुन' तो मो पै है 'हुन हुन' का तुम लै गये हो ? जे सुनि ठाकुरु उठि कें ढूंढ़बे फूँ भाजे। कोरिया बिन के संग लगि लओ।

राह में एक नदिया परी। ठाकुरु नें कोरिया कूँ अपनी तरवार गहाइ दई[2] और कही कि मेरे संग उतरि आ। जब बीचों बीच पोंचो, तरवार मियान में तें निकरि परी। कोरिया नें कही, ओ ठाकुस सा जामें सूँ मिगी[3] निकरि परी और चोकलो[4] मो पै रहि गओ। ठाकुरु नें कही कि काँ गिरि परी ? तब बा कोरिया ने नदिया में मियान फेंक कें बताओ कि बाँ गिरो है। मियान हू बह गओ। जा पै ठाकुरु खूब हँसे।

कोरिया नें, हात जोरि कें कही कि भले ठाकुरु, अम्मा नें अढ़ाई सेर रुई मागी है।

१—जगह, २—पकड़ा दी, ३—मींग, ४—छिकला,

४—कनौजी

(क) कन्नौज

एक दिन का भओ कि हम अपने दुआरे ठाढ़े रहै ँ औ एक अँधरो फकीर सड़क पर भीख मांगि रहो हतो कि एत्तेइ में एक मोटर निकसी। मोटर वाले ने आदमी क सामने देखि के कइयौ दांइ भोंपा बजाओ लेकिन वउ तउ अँधरो आदमी वहिका का सुझाई परै कि कै छोर घांइ मोटर है? ऐसो कुछ भओ कि जिछोर जिछोर वउ अपनी मोटर घुमावै वैछोरै वैछोर वहु फकीरउ घूमि परै। हिंया तक कि मोटर बिलकुल्हि वहि के तीर आइ गई।

तब मोटर वाले ने एक बारगी मोटर रोंकि दई और वहि में से एक आदमी उतरो औ फकीर क डांटन लगो कि हम एत्ती देर से भोंपा बजाइ रहे हैं तुम्हैं तनिकौ सुनाइउ नाईं पर्ति है जो हम मोटर रोंकि न

लेते तौ ठउरई मर जाते। वउ फकरीउ बड़ा झगड़ी रहै। मोटर वाले से कहन लगो कि तुम्हईं आंखी खोलि के चलाओ करौ हम तौ अंधरा हईं हैं। अभईं जो हम मरि जाते तौ तुमसे हिंयईं पर दुइसै रुपिया धराइं लेत।

(श्री बलभद्र प्रसाद मिश्र द्वारा संकलित)

(ख) कानपुर ज़िला

याकैं[1] हते[2] राजा बीर बिकरमाजीत। तिन्के याक रानी रहै[3]। उइ राजा औ रानी माँ बाजी लागी कि याक चिरैया बोलति रहै। तौन राजा तौ कहत रहैं कि हंस बोलतु है, औ रानी कहती हती कि कौनवां[5] बोलतु हुइ है। ऐसी हुज्जत रहै कि वहै चिरैया पेंडे[6] पै से उड़ि भाजी। तौ कौनवै निकलो। तब तो सरमाय कै राजा रानी कइहाँ निकारि दीन्हिेनि।

रानी के उइ राजा ते अढ़ाई महिना को औधान[1] हतो। उइ रानी का चलत याक मड़ैया[2] मिली। तौन तया केरी[3] मडैया कहावति हती। तौने माँ जाय कै रहीं जाय, औरु मडैया माँ टटिया लगाय लीन्हेनि। जब थोरी बिरियाँ माँ तया उइ मड़ैया के नेरे आये तब कहन लागे कि ई मड़ैया माँ लरिकिनी होय तौ लरिकिनी औ लरिका होय तौ लरिका होय। तब वहि माँ से उइ रानी ने जवाबु दओ कि हम फलानी आहिनु औरु अपनु सब बिथा तया से कहि डारी। तया वाहि की लरिकिनी ही की नाईं रच्छा कीन्हेनि।

फिरि नवमें महिना माँ उइ रानी के एकु लरिका भओ जब वहु लरिका बड़ो भओ तब औरे लरिकवन माँ खेलिबे का जान लागो और जब अनुवादु[4] करै तब उइ लरिकन ते सौगंधै खाय कि हम ऐसो नाहीं करो है। तब सब लरिकवा वहि के धौल मारैं। तब फिरि हर दाँय तयै की सौगन्ध खाय औ कहै कि हम अनुवादु नाहीं करो है। आखिर का उइ सब लरिकवा

१—गर्भ, २—कुटी, ३—साधु की, ४—शरारत,

वाहि-से कहैं कि अपने बाप के नाउँ बताव। तब वहि ने तयै के नाउँ बता दओ। तब फिरि उइ लरिकवा वहि से कहैं कि, धा ससुर तयै की सौगन्ध खाति है औरु तयै का बापु बनावति है औरु वैसे तौ तया केरी गुलामु है।

तब फिरि महैं[1] सरमाय करि के अपनी मैया से बापु के नाउँ पूँछो। तब वहि की मैया ने बापु को नाउँ बिकरमाजीत बताय दओ। दुसरे दिन बिकरमाजीत की सौगंध खाई। तब उइ लरिकवन वहि से कहो कि, ससुरऊ औरौ कबहूँ बिकरमाजीत को नाउँ सुनो है कि अबहीं जानत हौ? तब फिर ई सरमाय गयो औरु अपनी मैयासे कहो जाय कि हम अपने बाप के तीरा जैबे और कहिकै चलो गओ।

जाय कै उइ देश माँ पहुँचो जाय। हुवाँ याक कुआँ माँ पानी भरती हतीं। उन ते कहो कि हम का पानी पियाय देउ। उइ कहन लागीं कि पियाय

1—बहुत,

देती हतु। तब फिरि वहि ने कहो कि हम का जल्दी पियाय देव। तौ उइ कहन लागी, ऐसै जल्दी होय तौ कुआँ माँ कूदि परौ। तब कूदि परो। तौ वहि माँ देखो कि याक वहि माँ बहुतै नीकी लरिकिनी दैन्तुर केरी[1] बैठी है। तौन दैन्तुर बारा कोस इंगे[2] औरु बारा कोस उंगे[3] मानुस केरी महँक तक नाहीं राखति रहै। तौन मानुस की महँक पाय कर लरिकिनी से पूँछौ कि ह्याँ मानुस की महँक जानि परति है। लेकिन वहि ने भुनगा[4] बनाय कै लुकाय राखो।

जब दैन्तुर चलो गओ तब भेदै भेद उइ लरिका ने लरिकिनी ते उइ दैन्तुर केरे मरिवे की जुगुति पूँछि लई औ ओही जुगुति ते वहिका मारि डारो औरु वहिका ओही कोनवाँ से[5] ऐंचि लाओ औरु वहि के साथ बिआह करि लओ औरु बिकरमाजीत को लरिका बनि गओ।

१—दैत्य की, २—इधर, ३—उधर, ४—एक छोटा कीड़ा, ५—कुयें से,

५—बुंदेली

(क) झांसी ज़िला

एक गांव के माते[१] की छीर[२] के ढिगाँ एक गरीब किसान की खेती ठाढ़ी ती। ता खों[३] लख कें[४] माते बोलो कि काये रे, हमारी खेती अपने ढोरन सें चरा लयी, तो खों देख नयी परत कि हम रखवारी करे हैं ? किसान बोलो कि माते कक्का, ढोर[५] तो मेरे भुन्सारे[६] से हारे बरेदी[७] लइ गओ। माते ने सुन के कयी कि काल तेरौ बाप हमारी फिराद के लाने[८] चंऊतरे[९] जात तो। किसान ने जुआब दओ कि बाप मेरो तीन मइना से परदेस में है। तब माते ने कयी के तो तेरी मतायी[१०] हुए। किसान बोलो,

१—मुखिया, २—खुद काश्त; सीर, ३—उनको, ४—देख कर, ५—जानवर, ६—सुबह, ७—चराने वाला, ८—शिकायत करने, ९—कचहरी को, १०—मा,

मतायी मेरी बेजारी[1] से मर गयी। तब मैं नन्नो[2] हतो। वा की मो खों खबर नइय्या। माते ने दौर के बाखों तीन चार लातें और गतकिन से[3] भौत मारो। फरेब से सबरी[4] खेती वा की काट के अपने ढोरन सों चरा लयी और कयी के जो तैं फिराद के लाने राज में जैहे तो हमारे गाउँ में बसन ना पेहे।

किसान हार सों[5] अपने घरे आश्रो और अपने मानसन सें माते की सबरी हकीगत कयी। तब सब की सम्मत भयी के चलो राज में फिराद करें। हुना हाकिम के आँगे सबरो ठीक हो जेहे। और जो मोंगे[6] बैठ रैहैं तो गाओ में निब्बो बड़ी दारें हुहे[7]। तब किसान सब की मुँह की कुदाई[8] हेर के बोलो कि सुनो भइय्या तला में[9] रेइ-के मगरा सों बैर करबो भलो नइयां, और अब तो हम ने जा ठान लयी कि खेती पाती जा गांव में ना करें। बनजी भोरी[10]

१—बीमारी, २—छोटा, ३—घूँसों से, ४—सब, ५—खेत ६—चुप, ७—रहना मुश्किल हो जायगा, ८—बातों की वीरता, ९—तालाब में, १०—तिजारत इत्यादि,

कर कें अपनो पेट भरहें ओर अपनी मड़य्या में डरे तो रेहे।

बा बेरा हुना मुत के[1] मान्स जुरे ते। किसान की बातें सुन के मोंगे हो गये। उन में से एक जने ने कयी के सुनो भैय्या जबर फरेबी के आँगें निबल बे-अपराधी की बात काम नई आउत, ता सें भइय्या गम खाओ ओर अपने घरें बैठ रओ।

(ख) ओरछा रियासत

एक बेरै एक हाँथी मर गवो तो[2]। जब ऊ कौ जी[3] जमराज कै गवो। तौ उन नैं पूँछी कै तैं इतनौ बड़ौ है और आदमी जो इतनौ हलकौ है, ऊ के बस मैं काये रात[4] ? हांथी कौ जी बोलो कि तुमैं मुरदन सैं काम परत है, अबै जिंदन सैं काम नहीं परो। जम-राज सोंचे कि जिंदा कैसे होत हू हैं। अपने जमदूतन खां[5] हुकम दवो कि जाव सिसार सैं एक जिंदा लै

१—बहुत से, २—मर गया था, ३—जीव, ४—क्यों रहता है, ५—को,

आवो। बे गये और एक मुसद्दी कौ[1] लै आये जो अपनी खाट में सब अपने कागद आगद धरें सोवत तो। जम जमपुरी में पहुँचे तो मुसद्दी खाँ एक जागाँ[2] उतार दवो, और अपुन जमराज कैं गये।

इतनैं बीच मैं मुसद्दी नैं उठ कै अपनें सब कपड़ा पहिने और एक परवानौ बिसनु की कचहरी को लिखो कि जमराज खारज,व सिवराज[3] बहाल, और त्यार हो कैं बैठ रहे। जब जमराज के सामनै गये तब झट परवानौ उनैं दवो। जमराज नै परवानौ देखत-नई सब अपनी जागाँ को काम सिवराज खाँ सौंपो और अपुन बिसनु कैं गये और बिंतवारी करी कि मो सैं का काम बिगरो कि मैं बरखास कर दवो गवो।

इतनैं बीच मैं सिवराज नैं अपनैं हेती ब्यवहारी मिरत लोक सैं बुला कैं खूब सुख करो और फिर उतई पठवा दवो। बिसनु जमराज खाँ संगै लै कैं सिवराज के पास आये और बोले

१—लेखक; मुंशी, २—जगह, ३—मुसद्दी का नाम,

सिवराज सैं कि तुम नैं अब खूब काम कर लवो है, और फिर सिवराज खाँ मिरत लोक मैं पठुवा दवो, और जमराज सैं कही कि देखौ जिंदा कैसें होत हैं। फिर जमराज खाँ उन कौ काम सौंप कैं अपनैं लोक खाँ चले गये।

६—अवधी

(क) प्रतापगढ़ ज़िला—पूर्व

एक अहीर के घरे माँ चार मनई लरिका, सास, पतोहू और बाप रहत रहें। मुला[१] चार थू वहिर रहें।

बेटौना एक दिन खेते माँ हर जोतत रहा औ ओही ओरी से दुई राही चला आवत रहें। वै बेटौना से गुहराइ कै[२] पूँछिन कि हम रामनगर का जावा चाहित अहै कौनी डगर से जाई? तौ ऊ अहिरवा जानिस कि हमरे बरधवन का पूछत अहैं कि बेचब्या? औ गोहराय के कहिस कि बरधवन का हम न बेचबै। यहि पर रस्ता गीरै गुहराइ कै कहिन कि हम का बैल न चाही, रहा[३] जौ जानत हुआ तौ लखाइ द्या[४]। तौ ऊ जानिस कि सौ रुपैया बरधवन कै लगावत अहैं। औ गुहराइस कि राजू, सौ रुपैया काव जौ दुयू सौ देत्यो तबहूं हम आपन बरधवन तुहैं न देइत।

१—किन्तु, २—बुलाकर, ३—रास्ता, ४—दिखावो,

कछुक बेर माँ ओह के महतारी रोटी वहि के बरे लौई। रुट्या खाती बेरा बेटौना बोला माई हो, आज दुइ मनई बरधनन के सौ रुपैया देत रहें। मुला हम कहा कि दुई सौ का हम न देबै, सौ रुपैया कौन चीज आटै। महतरया बोली कि हाँ बच्चा हम हूँ जानित है कि सागे माँ[१] लोन[२] आज सेवाइ[३] हुइ गवा अहै। मुला जौन कुछ होइ तनी तुनी ऐसिन खाइ ल्या।

लौट कै जब घरे आइ तौ पतोहिया से[४] कहिस कि लोन सागे माँ अस सेवाइ कै दिहे कि बेटौना से रोटी नाहीं खाइगै। तौ ऊ कहिस कि बासन[५] दै कै मैं मिठाई कब लिह्यों रहा। दादा जौन दुआरे पर बैठ रहत हैं चला तिन से हजुराइ देई[६]।

दूनौ झगरत झगरत जौ दुआरे पर आईं तौ पतोहिया ससुर से बोली कि क हो, तूं हमैं बासन दै के मिठाई लेत कब देखे रह्या ? तौ ससुरवा बोला कि गोरू चरावै तौ तूं जा औ लाठी हम से पूँछब्या ?

१—साग में, २—निमक, ३—अधिक, ४—बहू से, ५—बर्तन, ६—पुछवा दूं,

(ख) प्रतापगढ़ ज़िला—पश्चिम

याक घरे मा कथा कही जात रही। पण्डित जौन कथा कहत रहें सगरे गाँव का न्योतिन रहैं। सुनवैयन माँ याक अहिरौ आवत रहै। ऊ कथवा सुनतीं बेरा र्‌वावा बहुत करै, औ पंडितौ वहि का प्रेमी जानकै वहि का नीकी तना बैठावैं औ खूब खातिर करैं। याक दिना पंडितौ पूँछिन कि राउत, तूँ र्‌वावत बहुत हौ, तुम का काउ समझ परत है? तौ अहिरवा औरौ सेवाइ[1] र्‌वावै लाग औ कहिस कि महाराज मोरे याक भैंस बिआन रही। कुछ बगद गवा[2] औ ऊ बहुतै बेराम[3] हुइ गै, औ पड़ौना का[4] नेकचाइ न देत रही[5]। तौ पड़ौना दिना भर चिक्यान औ साँझीं जूनी[6] मरगा। तौन पंडित, वहै कै नाई तुहूं दिना भै चुकरत रहत हौ[7]। मैं का डेर लागत है कि कतहूँ तूँहूँ न ओकरी नाई[8] मर जा।

१—अधिक, २—बिगड़ गया, ३—बीमार, ४—बच्चे को, ५—निकट नहीं आने देती थी, ६—संध्या समय, ७—बोलते रहते हो, ८—उसकी तरह,

७—बघेली

माडला ज़िला

कोई देश में कोई बैपारी एक भारी तालुका-केर मालिक बन कर ओ में सुख चैन से रहत रहै। ओ कर[१] तीन ठुन मीत रहै[२]। ओ में से दुइ झन-ला[३] खूब मोह करत रहै और दुइ झन से तीसर मीत ओ कर से खूब मोह राखत रहै। और ओ ओ ला[४] तनक[५] मोह करत रहै। और ऐसन होत-रहे कि आँगू जब ओ कर दुइ मीत बैपारी केर भलाई और माया में मगन होत रहै तब तीसर मीत फिकर में हुइ के ऐसन बूझे कि मोर से बैपारी काहिन काज गुस्सा भइस है।

पछारी ऐसन भइस कि बैपारी कोनों बात में राजा के ढिगा कसूर में झुक गइस[६]। तब राजा

१—उसके, २—मित्र थे, ३—जनों से, ४—उससे, ५—कम, ६—फंस गया,

ओ ला बोलाइस कि बैपारी मोर ढिगा आय के ओ बात केर जुबाव देय। ऐसन बात राजा केर बैपारी सुनकर खूब डराइस और सोचन लगिस कि असना[1] दुख संकट में कसना करूँ। मो से बड़ा चूक भइस है कैसे राजा के आँगू मंतक[2] रहैला परही, और भगेला जुगत निह बनय। और राजा धरमी और न्याय छनइया[3] होही, तो मो ला यह चूक में विना दुख सजा दये निह मान ही। एक जुगत है जो मोर मीत हैं उनी ला सग लै जहूँ, उन मोर न्याव के बीच माँ बोलहीं, और राजा से कहहीं कि राजा महराज अब की चूक ला समोरव ले[4]। और मो ला दुख सोच से बचाहीं। तं. कौन जाने राजा ओ कर सुन लेय और मो ला सजा झंप दवाबे[5]।

तब बैपारी अपन मीत ला बोलाइस और ओ ला ये हाल बताइस और हाथ जोरिस बिनती करिस कि भाई, राजा कहाँ[6] मोर संग चल और मोर

१—ऐसे, २—चुप, ३—न्यायी, ४—क्षमा कर दीजिये, ५—माफ़ कर दे, ६—के निकट,

तरफ से राजा से बिनती कर के मोर जीव ला बचाय ले। तब वह ओ ला कहिस कि भाई यह तोर असल जुगत है। मैं राजा के ढिगा तोर संग निह जाऊँ। मैं कौन मुँह लय के जाहूँ और राजा ला बिनती करहूँ। राजा मोर ऊपर गुस्सा निह करही ? कसूर चूक में तुही झुके हस, अकले तुहीं जा, मैं निह जाऊँ।

बैपारी यह गोठ[1] सुन के ज्यादा दुख मे बैहा-धाई[2] हुय के बिचारन लगिस हाय हाय में जना कसना करूँ मैं दूसर मीतला बोलाहूँ। ओकर भरोसा है वह मोर संग राजा कहाँ चलही। तब दूसर मीतला बोलाइस, और ओकर दूसर मीत आइस, और ओला सब हाल बताइस। तब वा ओला कहिस, अच्छा है मैं चलहूँ। मीतकेर गोठ बैपारी सुनकेर खुसी भइस और उन दोनों झन एकई संग उठके रींग दीइन[3]। जब गाँवके फटका[4] ढिगा पहुँचिन तब बैपारीकेर संगी मीतओला कहन लगिस कि

१—बात, २—बेहोश, ३—चले, ४—फाटक

भाई अब डराथूँ । राजा के आगू मैं काहिन बताहूँ । कहूँ राजा मोर गोठ सुन के मो ला गुस्सा होय । कहूँ मो ला सजा दवावे । मैं घर ला मुरके जाहूँ । तोर संग निह जाऊँ । ऐसन बतायके भग दीइस ।

बैपारी जब असना देखिस तो अपन ऊपर सांस लेन लगिस और आह मारन लगिस कि हाय हाय जिन ला मैं मीत जानत रहों और खुसी और आनन्द के दिन में मो से बड़ा प्रीत राखत रहं अब दुख में मो ला छोड़ दीइन । भगन देव असना छलीन ला[1] । मोर एक मीत और है । ओ ला बोलाये ला मुस्किल है काहे से कि ओ ला मैं नीच जानता रहों । त कर लये वह मोर सहाँव[2] निह हो ही । मोला[3] और कोई जुगत तो सूझ निह परै । मैं ओ कर ढिग जाहूँ । कहूँ मो ला वह उदास और रोवत देख केर ओ कर मन घुट जाय और दया करय मोर बिनती ला सुन लेय । तब ओ कर ढिगा-

१—छलियों को, २—सहायक, ३—किन्तु

बैपारी गइस और सरमाय के व आँखन में आँसू भर के कहिस ए प्यारे भाई, दया कर के मोर चूक ला समाख ले। मोर असना[1] हाल है। दया कर के आव और राजा से मोर पुकार कर के मो ला बचाय ले। ओ कर तीसर मीत दुख केर बात सुन के कहिस कि भाई तोर आये से मो ला बहुत खुसी भइस। मोर और तोर आँगू के बात ला जान दे, कोई बात ला झय घोख[2]। मैं सब दिन तोर ऊपर माया[3] करत रहों। अब मो ला जहाँ लग बन परही तहाँ लग तोर भलाई करहूं। राजा मोर चिन्हार है।

सो वे दोई झन राजा ढिगा रींग दीइन। और ओह राजा से पुकार करिस। ओ कर पुकार ला राजा सुन लीइस। और बैपारी ला अपना ढिगा बोलाइस। और सजा केर बदली मों ओ ला माया करिस ॥

१—ऐसा, २—न याद कर, ३—प्रेम

८—छत्तीसगढ़ी

बिलासपुर ज़िला

एक ठन गांव माँ केवट औ केवटिन रहिस। तेकर एक ठन लइका[1] रहिस। केवट हर महाजन के रुपिया लागत रहिस। तब एक दिन साव रुपिया माँगे बर आइस। तब सियान मन[2] घर माँ न रहँय। लइका घर राखत बैठे रहय। साव हर पूँछिस कस रे बाबू[3], तोर दाई ददा मन कहाँ गये हैं। ओतेक माँ टूरा हर[4] कहिस के मोर दाई गये है एक के दू करै बर, औ ददा हर काटा माँ काटा रूँधे बर गये है। तब साव हर[5] कथय, के कैसे गोठियात हस[6] रे टूरा? तब टूरा कथय, मैं तो ठीका[7] गोठियाथौं। ओतेक माँ टूरा के औ साव के लराई भय भय। साव

१—लड़का, २—बड़े लोग, ३—ऐ लड़के, ४—लड़के ने, ५—साहूकार, ६—बोलता है, ७—ठीक,

हर कहिस के तैं जौन बात ला गोठियाये हस तौन बात ला सिरतोन करदे[1] । नहीं करबे तो तोला साहेब के कचहरी माँ ले जाबो । तब तोला सजा हो जाही । टूरा हर कहिस मोर दाई ददा मन जतका तोर रुपिया लागत हैं तेला तैं छाँड़ देवे तब मैं ये कर भेद ला बता हौं । ओतेक माँ सावहर कहिस के भेद ला नहीं बतावे तौ तोला कैद करवा देहौं । तब टूराहर कहिस, हौ महराज चल । साहेब लँग चली ।

केवट के टूरा औ साव दूनो झन[2] साहेब लँग गइन । साहेब लँग साहहर फरियाद करिस के महाराज मैं आज बिहनिया[3] केवट के घर गयौं तब केवट औ केवटिन घर माँ नहीं रहिन । वोकर लइका रहिस तब मैं वो-ला[4] पूँछेंव के कस रे बाबू, तोर दाई ददा मन कहाँ गये हैं । तब ये टूराहर कथय कि मोर दाई गये हैं एक के दुई करे बर, औ ददा गये हैं काटा माँ काटा रूँधे बर । तब येकर औ

१—सच साबित करदे, २—जन, ३—प्रातः, ४—उससे

मोर लराइ भय गय। येकर मोर हार जीत लगे है। येकर नियाव ला कर दं, ये हर जैसन गोठियात हवै। साहेबहर टूरा लं पूँछिस के कस रं टूरा येकर भेद ला बतैबे। टूरा कहिस, हौ महराज साव हर सबो रुपिया ला छोड़ देही ना महराज। वोतंक माँ साहेबहर साव ला पूँछिस के ये कर भेद ला टूराहर बताय देही तो सबो रुपिया ला छोड़ देबे ना। साव कहिस हौ महराज। औ नहीं बताहीं तो सजा हो जाही न महराज? साहेब कहिस अच्छा तुम मन चुपे चुप ठाढ़े रहा।

साहेब टूरा ला पूँछिस, कस रे टूरा तैं कैसे सावला[1] गोठियाये। टूरो कहिस मैं ऐसन गोठियायों के साव पूँछिस के कस रे बाबू तोर दाई ददा कहाँ गये हैं? तब मैं कहथौं के मोर दाई गये है एक के दुई करे बर, औ ददा गये है काटा माँ काटा रूँधे बर। सुना महराज, मोर दाई गये है चना दरे बर। तब एक ठन के दू दार होत है। येकर भेद इया भय

1—साहूकार से

महराज। दूसर बात ऐसन अय के मोर ददा हर भाटा बारी माँ काटा रूँधे बर गये रहिस। तब महाराज भाटा माँ काटा होत है। तब मैं कहथौं काटा माँ काटा रूँधे गये हैं। इया साव हर लराई लरिस मोर लँग। साव हर बोतेक माँ बड़बड़ाये लागिस। साहेब कहिस, चुप रहो साव। तैं तो हार गये। इया टूराहर जीत गइस। टूराहर सिरतोन बातला बताइस है। रुपिया ला छाँड़ दे ॥

६—भोजपुरी

गोरखपुर ज़िला

एक जनी अहिर ससुरारि करै गइलैं। उहाँ राति के दीआ बरत रहै[१]। इ कब्बो[२] दीआ बरत देखले नाहीं रहलैं। अपने मन में कहलैं हो न हो ई है अँजोरिया कै बच्चा[३]। जब उनकै ससुर नेग बिदाई देवै लगलैं त ई कहलैं, ए राउत, हम लेब त अँजोरिया कै बच्चै लेब। ससुर दे दिहलैं। बाकरि[४] इनके मन में तब्बो खटका रहल। राति के जब सब सूति गैल[५] तब ई दीआ छान्ही[६] के नीचे धरा दिहलैं। घर में आगि लगि गइल। सज्जी[७] धन दौलत बिला-तिला गइल[८]। इहो रोए लगलैं, हमार अँजोरिया कै बच्चा ओही में जरि गइलैं। सब लोग जानि गइलैं कि इहै सार घर फुकलसि है॥ (संरबरिया)

१—चिराग़ जलता था, २—कभी, ३—उजियाली अर्थात् चाँद का बच्चा, ४—किन्तु, ५—सो गये, ६—छप्पर, ७—सब, ८—नष्ट हो गई।

साहित्यिक खड़ी बोली

साहित्यिक खड़ी बोली

(क) साहित्यिक उर्दू : क्लिष्ट

यह ग़रीबुद्दयारे अह्द[1] व नाआश्नाए अस्र[2] बेगानए ख़ेश[3] व नमक परवर्दए रेश[4] मामूरए तमन्ना[5] व ख़राबए हसरत[6] कि मौसूम[7] व अहमद व मदऊ[8] बे अबुल्कलाम है सन् १८८८ ईस्वी मुताबिक़ ज़ुलहिज्जा सन् १३०५ हिज्री में हस्तिए अदम[9] से इस अदमें हस्तीनुमा[10] में वारिद हुआ[11] और तुहमते हयात से मुत्तहम[12]।

१—समय रूपी देश का पथिक, २—संसार में अपरिचित, ३—नातेदारों में विदेशी, ४—घावों का पाला हुआ, ५—लालसाओं का नगर, ६—निराशाओं का मरुस्थल, ७—नामक, ८—ज्ञात, ९—अस्तित्व हीन संसार १०—प्राकृतिक संसार जो वास्तव में अस्तित्व हीन है, ११—प्रवेश किया, १२—जीवन के दोष से दूषित

अब क़दम को तेज़ी और हिम्मत की चुर वापस भी मिल जाय फिर भी वह दौल वक्त कब वापस मिल सकती है जो लुट चुव और वह क़ाफ़िलए उम्मीद वतन[1] पसमाँदगा ग़फ़लत[2] की ख़ातिर लौट सकता है जो जा चुका

सुभान अल्लाह,[3] वख़्त की फ़ीरोज़ी[4] औ ताले‌अ की अर्जुमंदी[5] नीमए उम्र[6] लग्ज़िशों और ठोकरों को पामाली[7] व दरमाँदगी[8] में बसर हो चुकी नीमे उम्र जो शायद बाक़ी है दम लेने व सुस्ताने में ख़तम हो रही है। न मंज़िले मक़सूद[10] का पता है न शाहराहे मंज़िल[11] पर क़दम। जब

१—ऐसे यात्रियों का समूह, जो घर पहुँचने की आशा में चला जा रहा हो, २—आलस्य के रोगियों, ३—धन्य ईश्वर, ४—भाग्य की सिद्धि, ५—भाग्य का बड़प्पन, ६—अर्द्ध आयु, ७—फिसलना अथवा दुष्कर्म, ८—कुचलना, ९—थकावट या बीमारी या व्यथा, १०—उद्देश्य, ११—वह पथ जो उद्देश्य तक मनुष्य को पहुँचाता है

पाँव में तेज़ी और हिम्मत में जवानी थी तो रह-नवर्दी[1] व मंज़िल-तलबी[2] का दरवाज़ा न खुला। अब पामालियों और उफ़्तादगियों[3] से न क़दम में पामर्दी[4] रही न हिम्मत में कारफ़र्माई[5] तो तलब[6] ने आँखें खोलीं और ग़फ़लत ने करवट ली। राहदूर और निशाने मंज़िल[7] गुम। कीसए ज़ाद[8] ख़ाली और सरो सामाने कार[9] नापैद। वक़्त जा चुका और हर आन व हर लम्हा[10] कारवाने मक़सूद[11] से दूरी और मंज़िले मुराद[12] से महजूरी[13] बढ़ती गई।

(मौलाना अब्दुलकलाम आज़ाद, 'तज़्किरा')

१—भ्रमण करना, २—उद्देश की पूर्तिका विचार, ३—सांसारिक क्लेश, ४—बल, ५—विचार शक्ति, ६—इच्छा अथवा उद्देश्य की पूर्ति का विचार, ७—उद्देश्य का ठिकाना, ८—वह थैली जिसमें यात्रा की सब सामग्री होती है, ९—कार्य्य की सामग्री १०—प्रत्येकपल, ११—ध्येय की ओर जाने वाला कारवाँ, १२—ध्येय, १३—वियोग

(ख) साहित्यिक उर्दू : साधारण

बेगम ने देखा होगा दिल्ली शहर में एक जामा मस्जिद है जिसको हमारे दादा शाहजहां ने बनाया था। दूर दूर की खिलक़त[1] उसको देखने आती है मगर इसको कोई नहीं देखता कि मस्जिद की सीढ़ियों के सामने फटे हुये बुर्के के अंदर नातवां[2] बच्चे को गोद में लिये पेवंद लगा पाजामा और गोटे[3] हुई कल्ले लगी जूती पहिने कौन औरत भीख मांगती है। बेगम! यह ग़रीब दुखिया शहज़ादी है जिसका कोई वारिस[4] नहीं रहा। तुम यक़ीन करना मेरी रहमदिल बादशाहरानी, उसी के बाप शाहजहां ने यह मस्जिद बनवाई थी। आज पेट के लिये भीख के टुकड़े जमा कर रही है ताकि ज़िन्दगी की मस्जिद आबाद करे[5]।

मुझे शर्म आती है मैं तुमसे क्योंकर कहूँ कि यह हज़ार रुपये बहुत थोड़े हैं। मरहूम के एक

१—जनता, २—दुर्बल, ३—किनारों पर ज़री का काम की हुई, ४—नातेदार, ५—अपने पेट को पाले

छोटे मे फाया से क्या होगा। हमारे तो सारे बदन पर ज़ख्म हैं। तुम्हारी नई दिल्ली की ख़ैर[1] जिसकी सड़कों में लाखों रुपया ख़र्च हो रहा है। तुम्हारी नई इमारतों की ख़ैर जिनके वास्ते करोड़ों रुपयों की मंज़ूरी है। तुम्हारे इस नेक ख़याल की ख़ैर जिसकी बदौलत दिल्ली की पुरानी इमारतों की मरम्मत हो रही है और बेशुमार रुपया इसमें खर्च किया जा रहा है। हमारे पेट की नामुराद[2] सड़कों की भी मरम्मत हो, और हमारे टूटे हुये दिलों पर भी इमारतें चुनवाओ। हम भी पुराने ज़माने की निशानियाँ हैं। हमको भी ज़िन्दा आसार क़दीम[3] में लोग समझते है। हमको भी सहारा दो मिटने से बचाओ। ख़ुदा तुमको सहारा देगा और बचायेगा।

(ख़्वाजा हसन निज़ामी 'बेगमात के आंसू')

१—इसशब्द का मुसलमान भिखारी बहुत प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ है 'भला हो' २—असंतुष्ट, ३—भूतकाल

(ग) बेगमाती उर्दू : लखनऊ

अम्मी जान, खुदा करे आप सलामत रहें। बहिन झम्मन साहिब आज लखनऊ में दाख़िल हुईं उनसे आपकी सब ख़ैर-ओ-सलाह़ मालूम हुई। बड़े मामू का जी आये दिन[1] माँदा रहता है। लखनऊ में बहुत दवा-दर्मन की मगर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। कल्ह अगर ऊपर वाला हो गया[2] तो जुमारात को[3] वह ज़रूर इलाज करने फ़ैजाबाद सिधारेंगे।

आज कल्ह यहां चोरों का बड़ा नर्ग़ा[4] है। पड़ोस में ख़ानम साहिब के यहाँ कल्ह दिन दहाड़े कई चोर घुस आये। बड़ा ग़ुल गपाड़ा मचा। सिपाही निगोड़े गंवार के लठ, समझे न बूझे हुल्लड़ सुन्ते ही हमारे मकान में दर्रान चले आये। वह तो कहिये बड़ी ख़ैरियत गुज़री। आदमी ड्योढ़ीपर मौजूद था, उसने रोका थामा, नहीं तो सब का सामना हो जाता।

१—नित्यप्रति, २—चाँद देख पड़ गया, ३—बृहस्पतिवार को, ४—झुंड

उसमें से दो चोर पकड़े भी गये । मुओं ने हाकिम के सामने उल्टा छुड़ा[1] रक्खा कि ख़ानभ साहिब के बेटे ने मकान अकवाने के बहाने से घर में बुलाया। दोपहर बन्द रक्खा, पचास रुपैय्ये छीन लिये, उल्टा चोर चोर करके ग़ुल मचा दिया।

नज़ीर और उन्की बीबी में रोज़-मर्रा झंझट हुआ करती है। नज़ीर को तो जानिये आप एक नक चढ़ा, बीबी भी मिज़ाज दार, ज़र्रा ज़र्रा सी बात पर तू तू मै मै होने लगती है। लाख समझाया "बहिन, कच्चा साथ है। ख़ुदा रक्खे, सियानी लड़की बियाहने लायक़ पहलू से लगी बैठी है। उसके सामने इस बकबक· झकझक, दिन रात के दाँत किल-किल से क्या फ़ायदा "। मगर ऐसी अक़्लों पर ख़ुदा की मार। समझने में बात के बतंगड़ बढ़ते हैं। कौन दख़्ल दे। उल्टा नक्कू बने।

औलाद अली को देखिये। न कोई बात न

१—इल्ज़ाम

चीत। बेकार बेकार भी माँ से लड़ाभड़ कर दाग्र-याल चला गया।

बेगम जान का छ महीने का पालापोसा बच्चा परसों जाता रहा। बेचारी एक आंख दबाती है लाख आंसू गिरते हैं। अभी मियाँ को मरे पूरे चार महीने भी नहीं हुये थे कि यह आसमान फट पड़ा। गरीब की रही सही आस भी टूट गई।

(घ) साहित्यिक हिन्दी : क्लिष्ट

कविता वास्तव में हृदय का उच्छवास, अथवा आनन्दांगुलि विलोड़ित हृत्तंत्री के मधुर नाद का शाब्दिक विकास है। यह स्वाभाविकता है कि जिस समय मनुष्य के हृदय में आनन्द-उद्रेक होता है उस समय अनेक अवस्थाओं में केवल वह कण्ठध्वनि द्वारा ही उस आनन्द का प्रदर्शन करता है। किसी किसी अवस्था में उसके मुख से कुछ निरर्थक शब्द निकलते हैं और वह उन्हीं के द्वारा अपने हृदयोल्लास की परितृप्ति करता है। कभी वह सार्थक शब्दों को

कहने लगता है और इनको इस प्रकार मिलाता है कि उसमें गति उत्पन्न हो जाती है और वे छन्द का स्वरूप धारण कर लेते हैं। बालकों को, उन बालकों को जो खेल कूद में मग्न अथवा उछल कूद में तल्लीन होते हैं, हम इस प्रकार का वाक्य विन्यास करते देखते हैं जिनका स्वरूप सर्वथा कविता का सा होता है। उसमें शब्दानुप्रास और अन्त्यानुप्रास तक पाया जाता है। गोचारण के समय हृदय पर सामयिक ऋतुपरिवर्तन-जनित विकासों, तरुपल्लव के सौंदर्य्यों, खगकुल के कलित कलोलों, श्यामल तृणावरण-शोभित-प्रान्तरों, कुसुमचय के मुग्धकर माधुर्य और वर्षाकालीन जलदजाल का लावण्य देख कर भूखों के मुखसे भी आमोद सिक्त ऐसे वाक्य सुने जाते हैं जो स्वाभाविक होने पर भी हृदय हरण करते हैं-और जिनमें एक प्रकार का संगठन होता है। ऐसे अवसरों पर किसी सुबोध विद्वान अथवा भावुक के हृदय से जो इस प्रकार के वाक्य निकलेंगे तो अवश्य वे सुन्दर सुगठित और अधिक मनोहर होंगे, यह

निश्चित है छन्दों अथवा कविता का आदिम सूत्र-पात इसी प्रकार से हुआ ज्ञात होता है।

(पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'बोलचाल')

(ङ) साहित्यिक हिन्दी : साधारण

कूप-मण्डूक भारत, तुम कबतक अन्धकार में पड़े रहोगे। प्रकाश में आने के लिये तुम्हारे हृदय में क्या कभी सदिच्छा ही नहीं जागृत होती? पक्षहीन पक्षी की तरह क्यों तुम्हें अपने पींजड़े से बाहर निकलने का साहस नहीं होता? क्या तुम्हें अपने पुराने दिनों की कभी याद नहीं आती? किन दिनों की, जानते हो? उन दिनों की जब तुम्हारे जहाज फारिस की खाड़ी और अरब के सागर में चलते थे और जब तुम्हारे व्यवसाय-निपुण निवासियों ने, सहस्रों की संख्या में, मिस्र, ईरान, और यूनान के बड़े बड़े नगरों में कोठियाँ खोल रक्खी थीं। उन दिनों की जब ब्रह्मदेश, श्याम, अनाम और कम्बोडिया ही में नहीं, मलय-प्रायद्वीप

के जावा और बाली आदि टापुओं तक में तुम्हारा गमनागमन था और जब तुमने उन दूरवर्ती देशों और द्वीपों मे भी अपने उपनिवेश स्थापित किये थे। उन दिनों की जब तुम्हारे बौद्धभिक्षु और अन्य विद्वज्जन गान्धार, तुर्किस्तान और चीन तक के निवासियों को अपने धर्म्म, अपनी विद्या और अपने विज्ञान का दान देने के लिए वहां तक पहुँचे थे। उनदिनों की जब खोस्त और यारकन्द के समीपवर्ती अगम्य प्रदेशों में भी तुम्हारे धर्म्माचार्य्यों ने बड़े बड़े मठों, मन्दिरों, स्तूपों और चैत्यों की स्थापना की थी।

(पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, 'समालोचना समुच्चय')

(ग) साहित्यिक हिन्दी : हिन्दुस्तानी के निकट

नागरी लिपि में छपी हुई पुस्तकों और समाचार पत्रों की भाषा—चाहे आप उसे साहित्य की हिन्दी कहिए, चाहे कुछ और—फारसी लिपि में छपी हुई पुस्तकों और समाचार पत्रों की भाषा से बिल्कुल

जुदा है। इस भेदभाव को जानबूझ कर न देखने या उसपर खाक डालने से काम नहीं चल सकता। ऐसा करना फिजूल है। अतएव यह बहुत जरूरी है कि डाक्टर सुन्दरलाल की सम्मति के अनुसार रीडरों में परिवर्तन किया जाय। यदि ऐसा न किया जायगा तो जो लड़के चौथा दरजा पासकर के मिडिल स्कूलों के पाँचवे दरजे में भर्ती होंगे उनकी पढ़ाई में थोड़ी बहुत बाधा जरूर आवेगी। यहां मतलब उन लड़कों से है जिनकी शिक्षा अपर प्राइमरी दरजों में नागरी-लिपि के द्वारा हुई होगी। जो लड़के चौथे ही दरजे से मदरसा छोड़ देंगे वे यदि मदरसा छोड़ने पर छोटी मोटी किताबें और अखबार भी न समझ सकें तो उनकी शिक्षा से उन्हें बहुत ही कम लाभ हुआ समझिए। जो लोग प्राइमरी मदरसों में भाषा संबंधी एकाकार करने के सबसे बड़े पक्षपाती हैं वे भी, आशा है, इस बात को स्वीकार करेंगे। पिगट साहब की राय का सारांश यही है।

(पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, 'समालोचना समुच्चय'

(छ) साहित्यिक हिन्दुस्तानी

सन् १८५७ ई० के ग़दर में ख़ास करके सिपाही लोग शरीक हुए थे। कहीं कहीं, जैसे अवध में, आम लोग भी शरीक हुए थे। उन्हें डर इस बात का था कि अंग्रेज़ी सरकार उनकी जाति नाश करने की कोशिश कर रही है। उनका मतलब यह कभी न था कि वे अंग्रेज़ों से इस देश को जीत लेवें और अपनी रियासत क़ायम करें। फिर उनको नाख़ुश और बेचैन देख कर दिल्ली के बादशाह, नाना साहब, अवध को बेगम, रानी लक्ष्मीबाई आदि अपना अपना मतलब हासिल करने के लिए उनके मुखिये बन गये। अगर ये लोग सिपाहियों की मदद न करते तो मुमकिन था कि बलवा इतना ज़ोर कभी न बांधता। अस्तु, अब सिपाहियों के जो लोग मुरब्बी व मुखिया बनकर लड़े थे उनकी ओर थोड़ी देर के लिए अपनी नज़र फेरो। इनकी हार होने की ख़ास वजह यह थी कि उन सब में मेल न था। वे सब के सब ख़ुदग़र्ज़ थे और अपना मतलब साधने की

कोशिश कर रहे थे। देश के लिए या देश की भलाई करने के लिए वे नहीं लड़ते थे। उधर बहादुरशाह अकबर के ऐसा एक जबरदस्त सम्राट् बनना चाहता था। उधर नाना साहब बाजीराव की बराबरी करना चाहता था। फिर अवध की बेगम और झाँसी की रानी स्वतंत्र बनना चाहती थीं। फिर उन दिनों हिन्दू मुसलमान को और मुसल्मान हिन्दू को नहीं चाहते थे। ऐसी हालत में जहां मतलबी लोग अपनी अपनी बढ़ती चाहते हैं और भाई भाई को प्यार नहीं करते, तब देश स्वतंत्र कैसे बन सकता है?

(मन्मथनाथ राय, 'भारतवर्ष का इतिहास')

हिन्दू उर्दू को साहित्यिक भाषा के रूप में अपनाने वाले अन्य प्रदेशों की बोलियां

१—बिहार की बोलियां

(क मगही

(गया)

बाघ हुँडार[1] और केंदुआ[2], एक बेरी ई तीनों मिलके अप०नन में मत मेरौल०कन[3] कि सब मिल के सिकार मारी और फेर अप०नन में बाँट लिही। ई कह जँगल०वा में उछ०ले कूदे लगल०थिन[4]। औ जब एगो[5] बड़०गो करिया हरिन मार लेल० थिन तब बघ०वा बोल उठलइ कि लाव० एक०रा बांटिअउ। और तुर०न्त ओकर तीन कुड़ी[6] करके हुंभर कर[7] बोल०लइ कि, पहिल कुदिया तो हम लेउब, काहे कि हम बनके राजा हिअउ, दोस०रो भी हम०हीं लेबउ काहे कि एक०रा मारे में बड़

१—भेड़िया, २—चीता, ३—मत मिलाप, ४—लगे, ५—एक, ६—हिस्सा, ७—गरज कर (बाघ की बोली)।

सूचना—० से तात्पर्य अर्द्ध अ से है।

मेह्॰नत कर॰लां ह॰, और तेसर कुदा धरल हउ. देखिअउ केकर दम चल॰ हउ कि हम॰रा आगूँ से ले जा ह॰ ।

ई सुन के केंदुआ और हुँड॰रा डरा के भाग गेलन और बघ॰वा अकेले हरिनिया के खइल॰ कइ । ई कहनूत सच्चे हे कि जेकर लाठी ओकरे भइस ।

(ख) मैथिली

(दक्षिणी दर्भंगा)

एगो[1] गँवारि गोआरिनि माथा पर दहेरी[2] धैलै चलल जाइ रहैय॰ । चलैत चलैत ओक॰रा जी में ई उमंग उठ॰लै, जे ई दही के बेंचब, पैसा सें आम मोल लेब । किछु आम हम॰रा जौरे[3] अछ[4] । सभ मिलाइ कै तीन सै सैं किछु बढ़ि जाइत । ओकरा में मैं[5] किछु सरिपन्चि जाइत । तब हूँ अढाइ सै तै

१—एक, २—दहीका बर्तन, ३—पास, ४—है, ५—उनमें से

बच०बे। आओर ओहि में से जे बचत ओकर बेसी दाम मिलत। तब दिवारी में एक हरिअर[1] मारी लेब। हैं हैं हरिअर मारी हम०रा मुँह पर नीक खुलत। आओर बस, हम तै हरिअरे सारी लेब। आओर ऐंठ जैंठ कै चलैत चलैत में से से लच-कत चलब।

एहि सोच बिचार में ऊ गँवारि गोआरिनि जे किछु चमक ठमक कै टेढ़ चाल चलल तब दहेरी ओक०रा माथा पर सैं गिर कै चूर चूर हो गेलै, आओर सैं सा बनल बनाएल घर बिगर गेलै।

1—हरा साड़ा

२—राजस्थान की बोलियां

(क) मारवाड़ी

(अजमेर)

अमलाँ मैं आछा लागो, म्हारा राज ।

पीवो-नी दारू-ड़ी ॥ [1]

सुरज थान्नै पुजस्यौं जी भर मोत्याँ-का थाल ।
घड़ेक मोड़ा [2] उगजो जी पिया जी म्हारै पास ।

पीवो-नी दारू-ड़ी ।

अमलाँ मै आछा लागो म्हारा राज ।

पीवो-नी दारू-ड़ी ॥

जा एँ दासी बाग मैं, श्रोर सुण राजन री [3] बात ।
कदेक [4] महल पधारसी, तो मतवालो धणराज [5] ।

पीवो-नी दारू-ड़ी ।

१—हे मेरे स्वामी, नशे में तुम अच्छे लगते हो, शराब ज़रूर पियो, २—एक घड़ी देर में, ३—राजा की, ४—कब, ५—स्वामी

अमलाँ मैं आछा लागो म्हारा राज।

पीवो-नी दारु-ड़ी ॥

थारी ओलूँ[1] म्हे करॉं, म्हारी करै न कोय।

थारी ओलूँ म्हे करॉं, करता करै जो होय।

पीवो-नी दारु-ड़ी।

अमलाँ मैं आछा लागो म्हारा राज।

पीवो-नी दारु-ड़ी ॥

(ख) जयपुरी

(जयपुर राज्य)

एक बाँण्यू छो। रात की भगत[2] दो-न्यूँ लोग लुगाई घर मैं सूता छा[3]। आदी रात गियाँ एक चोर आर[4] घर मैं वड़ गयो[5]। ऊँ भगत मैं बाँण्याँ नै नींद सूँ चेत हो ग्यो। बाँण्याँ नै चोर को ठीक पड़-ग्यो[6]। जद बाँण्यूँ आपकी लुगाई नै जगाई। जद लुगाई नै[7] कई आज सेठाँ के दसावराँ सूँ चीठ्याँ लागी छै

१—प्रेम, २—समय, ३—सोते थे, ४—आकर, ५—घुसगया, ६—ज्ञान होगया, ७—स्त्री से

सो राई भीत मैं गी हो ली। तड़कै रिप्यां बराबर अकैली। राई का पातां नै नीकां जावता सूँ मेल दे। जद लुगाई कई, राईका पाता आरली तबारी का खूणाँ मैं[2] पड्या छै। तड़कै ई नीकां मेल देस्यूँ।

चोर आ बात सुणर मन में बचारी, राई पातां मैं सूँ बाँदर[3] ले चालो। और चीज सूँ काँई काम छै। जद बो चोर राई का पातां की पोट बाँदर ले गियो। बाँण्यूँ देखी, और मालम्यूँ वच्यो। राई ले ग्यो। मालसूँ पंड छूट्यो। जद दन ऊग्यौं-ई बो चोर राई की झोली भरर बेचबा नै बजार मैं ल्यायो। तो बाजार का पीसा की ढाई सेरका भावसूँ माँगी। जद चोर मन मैं समझी बाँण्यूँ चालाकी करर आपका घर को धन बचा लियो।

(ग) मालवी

(झबुआ राज्य)

एक सरवण नाम करी ने आदमी थो। इणी

१—बर्तनों को, २—बाहर बरामदे के कोने में, ३—बाँध

रा[1] मा बाप आँखा ऊँ आँदा था। सरवण वणा ने तोक्याँ[2] फरता थे। चालताँ चालताँ आँदा आँदी ने रस्ता मे तरस[3] लागी। जदी सरवण ने कीदो के बेटा, पाणी पाव। म्हाँ ने तरस लागी। जदी ऊ वणा ने[5] बठे बेठाइ ने पाणी भरवा ने तलाव उपर गियो। वणी तलाव उपर राजा दशरथ की चोकी थी। जणी वखत सरवण पाणी भरवा लागो। जदी राजा दशरथे दूरा ऊँ देख्यो। तो जाण्यों के कोई हरण्यो पाणी पीवे हे। एसो जाणी ने राजा ए बाण मार्यो। जो सरवण रे छाती मे लागो। जो सरवण वणी वखत राम राम करवा लागो। जदी राजा ए जाण्यो के यो तो कोई मनख हे।

एसो जाणो ने राजा दशरथ सरवण कने गियो। तो देखे तो आपणो भाणेज[7]। राजा सोच करवा मंड्यो। जद सरवण बोल्यो, के खेर मारो मोत थाणा हात से ज लखी थी। अबे मारा मा बाप ने पाणी

१—उसके, २—लेकर, ३—अंधे अंधी को, ४—प्यास, ५—उनको, ६—वहाँ, ७—भानजा

७

पावजो। अतरो केइ ने सरवण तो मरि गियो। ने[1] राजा दशरथ पाणी भरी ने बेन बेनोई[2] पावा ने आयो। जदी आँदा आँदी बोल्या के तूँ कूँण हे। दशरथ बोल्यो के थाणो काई काम हे थें। पाणी पीयो। जद बेन बोली मे तो सरवण सिवाय दुसरा का हात को पाणी नी पीयाँ। दशरथ बोल्यो के हूँ दशरथ हूँ। ने मारा हातेँ अजाण मे सरवण मरि गियो।

आँदा आँदी सरवण को मरण हुणी[3] ने हा! हा! करी ने राजा दशरथ ने हराप[4] दीदो के जणी बाणू मारो बेटो मार्‍यो वणा ज बाणू तूँ मरजे। एसो हराप देइ ने आँदा आँदी बी मरि गिया।

१—और, २—बहिन बहिनोई को, ३—सुनकर, ४—शाप

३—पहाड़ की बोलियाँ

(क) कुमांयूनी

(अल्मोड़ा)

एक समय लछ्मु कोठ्यारी[1] नाम आदमी का[2] वज्र-मूर्ख सात पुत्र छिया[3]। वी का[4] मरणा[5] बाद वों[6] आपणी[7] इजा[8] कन[9] रात-दिन खाणा पिणा[10] सों[11] दिक करन छिया[12]। आखिर तंग आई[13] उनरी[14] इजा उनन कन[15] छोड़ी[16] आपणा[17] मैत[18] सों जानी रई[19]। उन कुपुत्रन[20] न खाणा-पिणा वणूणा को[21] सीप छियो[22] और न के[23] प्रकार की सहूलियत।

१—लक्ष्मीदत्त कोठारी, २—के, ३—थे, ४—उसके, ५—मरने के, ६—वे, ७—अपनी, ८—माँ, ९—को, १०—खाने पीने, ११—के लिए, १२—करते थे, १३—आकर, १४—उनकी, १५—उनको, १६—छोड़कर, १७—अपने १८—मैके १९—चलीगई, २० —कुपुत्रों को २१—बनाने की २२—जानकारी थी, २३—किसी

जब भूख ले[1] पेट मे हुड़किया नाचणा लगा,[2] तब एतुक[3] बिसी का सैखड़ा[4] हुनी[5] कै[6] मालूम भयो[6] । सब भाइन लें[7] इजा बुलौणा की[8] राय दी पर बुलौणा माँ जा को[9] ? कोई लग[10] रस्त में[11] डर का[12] कारण जाणा मां[13] राजी नी भयो[14], आपस में एक दूसरा[15] कन[16] दुख को कारण बताई[17] खूब लड़न छिया[18] । गाँव का लोग उनन[19] एक दूसरा का विरुद्ध और लग[20] भड़काई[21] दिछिया[22]

१—में, २—हुड़किया एक प्रकार के गा गा कर माँगने वाले होते हैं, अर्थात् भूख अत्यन्त सताने लगी, ३—इतने, ४—बीस के सैकड़े, ५—होते हैं, ६—करके, अर्थात वास्तविक बात मालूम हुई, ७—भाइयों ने, ८—बुलाने की, ९—कौन, १०—भी, ११—रास्ते में, १२—के, १३—जाने के लिए, १४—न हुआ, १५—दूसरे, १६—को १७—बताकर, १८—लड़ते थे, १९—उनको, २०—भी, २१—भड़का, २२—देते थे

अन्त में लड़ झगड़ी[1] वो[2] दुष्ट नष्ट होई गया[3]।

[श्री कृष्णानन्द जोशी द्वारा संकलित]

(ख) गढ़वाली
(पौड़ी)

एक राजा अर वजीरा नौना[4] मा बड़ी भारि दोस्ति छै। एक दिन दुय्या द्वी[5] जंगल मा सिकार खेन्नु तैं गैन[6]। एक मृगा पैथर[7] ऊंन घोड़ा छोड़ देने पर ऊन मृग नी छौंप सक्यो[8]। वीं दौड़ादौड़ि मा वो रस्ता भूल गिने। रिवड़ते[9] रिवड़ते वो थक गिने पर वूँ सणि[10] रस्ता नि मिल्यो। दो फरा घामै चटाक जो लगे त ऊँ सणि तीस[11] लग्गे। बड़ी देर तैं खोजणा रैने[12] पर करवी पाणी को बूंद नि मिल्यो। तव दुया द्वी एक

१—लड़ झगड़ कर, २—वे, ३—हो गए, ४—लड़कों में, ५—दोनों के दोनों, ६—गये, ७—पीछे, ८—नहीं पकड़ सके, ९—इधर उधर भटकते हुये, १०—को, ११—दोपहर की असह्य धूप लगने पर उन्हें प्यास लग गई, १२—रहे

पीफला डाला तल[1] बैठि गिने। वजीरा नौना न बोले कि भैजि मिं[2] आपको तैं जखन होलो[3] पाणि खोज तैं लौलो[4] अर वो तब पाणि खोजणू तैं चलगे। राजा नौना सणि पीफल डाला तला ठंडा बथौं[5] मा निंद ऐ गे। सिया मां वै का खुट्टा पर गुरौ न तड़ाक मार दे[6]। वजीरौ नौनो पाणि ले के आये व देखद त राजा नौना पर सान न बाच[7]। जपकाये[8] जुपकाये पर वें थैं होस नी आये। वे न तब राजा नौनो मुंड कोलि[9] पर धारे और सैरा दिन उखिमु[10] रोणू रये। स्यामलि दां[11] महादेव पार्वति जी वीं रस्ता असमान बटि जाणा छा। पार्वति जी न जब रोणों सुणे त ऊन बोले हे महादेव जी जन्नी[12] करदाई तै रुँदारा[13] की विपदा मिटै द्या[14]। तब

१—तले, २—भाई जी मैं, ३—जहां से होगा, ४—लाऊँगा, ५—बयार, ६—सोते हुवे में सांप ने उसके पैर को काट लिया, ७—होश न हवास, ८—टटोलना, ९—गोद, १०—वहीं पर, ११—शाम के वक्त, १२—जैसे हो, १३—रोने वाले की, १४—मिटा दीजिये

महादेव जि न एक बुढ्या बामणा को रूप धारे अर वजीरा नौना मु गैने। ऊन वे मा बोले कि सुण वजीरा लड़का जु तुने का घौ[1] पर गिचौ[2] लगै की बिस स सोड़ द्ल्यो[3] त यो बच जालो पर तु मर जैलो भै[4]। वजीरा नौना न महादेव जी सणि बोन्न भी न द्यो अर गिचो लगै दे। महादेव जी भौत[5] खुस ह्वै ने ऊन वे को हाथ पकड़े कि ठैर जा मि त्वै से बड़ो खुश छौं[6] अर त्वै सणि वरदान देंदू कि तेरो मित्र बच जालो। इनो बोली तै महादेव जी अन्तर्ध्यान ह्वै गिने। राजा नौनो चड़म[7] खड़ो उठे अपणा दगड़्या[8] सणी पुछणा बैठि गे। वे न सब हाल लगाये अर तब दुय्या द्वी महादेव जी का बड़ा भक्त ह्वै कि तैं घर गैने। खावन पिवन आनंद रवन[9]।

[श्री विशंभरदत्त भट्ट द्वारा संकलित]

१—घाव, २—मुँह, ३—चूस जाना, ४—मर जावेगा भाई, ५—बहुत, ६—हूँ, ७—एकदम से, ८—दोस्त, ९—रहूँ.

४—पञ्जाबी

(नाभा राज्य)

इक राजे दे सत्त धिआँ सन[1] । इक दिन राजे ने उन्हाँनूँ आखिआ[2], 'धिओ, तुसी कीदा भाग खादीआँ हो ?' छीआँ ने आखिआ, 'असी[3] बापू, तेरा भाग खादीआँ हाँ' । ते[4] सतमी ने आखिआ 'मैं ता अपना भाग खाँदी हाँ ।' तां राजे ने आखिआ 'मैं थानूँ[5] किहा जिया पिआरा लगदा हाँ ?' छीआँ ने आखिआ, 'तूँ, सानूँ[6] खंडवर्गा[7] पिआरा लगदा हैं' । ते सतमी-ने आखिआ, 'तूँ मैनूँ नून वर्गा पिआरा लगदा है ।'

ताँ राजे ने हरख के[8] आखिआ, 'एहनूँ किसे लँगड़े लूल नाल[9] विहा देओ । देखो फिर किकूँ[10] अपना भाग खाऊगी'[11] । ताँ ओह इक लँगड़े नाल

१—एक राजा के सात लड़कीं थीं, २—कहा, ३—हम, ४—और, ५—तुम्हें, ६—हमको, ७—शक्कर की तरह, ८—क्रुद्ध होकर, ९—साथ, १०—कैसे, ११—खायेगी

बिहा दित्ती। ओह विचारी लँगड़े नूँ खारी विच[1] पाके[2] मंगदी खादी पई फिर दी। इक दिन खारीनूँ इक छप्पड़ ते[3] कंढे ते[4] धर के आप मंगन चली गई। ताँ लँगड़े ने की देखिआ कि काले काँ[5] छप्पड़ विच बड़के[6] बग्गे[7] हो हो निकल्दे आओंदे हन। ताँ ओनांदी रीसम रीसी[8] लँगड़ा बी रुढ़दा पैंदा[9] छप्पड़ विच जा डिग्गा[10]। ते ओह नौबनौ[11] हो गिआ। ताँ जद ओ हदी बहू मंग तंग के आई ताँ ओह आऊँ दीनूँ[12] राजो बाजी हो के खड़ गिया[13]॥

१—टोकरी म, २—रख कर, ३—तालाब के, ४—किनारे, ५—काले कौवे, ६—घुस कर, ७—सफ़ेद, ८—उनकी नक़ल करके, ९—ढुढ़कता पुढ़कता, १०—गिरा, ११—अच्छा, १२—आकर, १३—खड़ा हो गया।

परिशिष्ट

हिन्दी की मुख्य मुख्य बोलियों के व्याकरणों की तालिकायें

संज्ञाओं में रूपान्तर

पुल्लिंग-आकारान्त तद्भव

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली ✓	ब्रजभाषा ✓
मूल रूप एकवचन	(घोड़ा)	(घोड्डा)	(घोड़ा)
" बहुवचन	—ए (घोड़े)	—ए (घोड्डे)	(घोड़ा)
विकृत रूप एकवचन	—ए (घोड़े)	—ए (घोड्डे)	(घोड़ा)
" बहुवचन	—ओं (घोड़ों)	—ओं (घोड्डों)	—अन (घोड़न)

अन्य

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
मूल रूप एकवचन	(आम)	(आँव)	(आम)
" बहुवचन	(आम)	(आँम)	(आम)
विकृत रूप एकवचन	(आम)	(आँव)	(आम)
" बहुवचन	—ओं (आमों)	—ओं (आँव्वों)	—अन (आमन)

पुल्लिंग-आकारान्त तद्भव

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूल रूप एकवचन	(घोड़वा)	(घोड़वा)	(घोड़ा, घोड़वा)
” बहुवचन	—ए (घोड़वे)	—मन (घोड़वा मन)	(घोड़ा, घोड़वा)
विकृत रूप एकवचन	(घोड़वा)	(घोड़वा)	(घोड़ा, घोड़वा)
” बहुवचन	—उन (घोड़उन)	—मन (घोड़ामन)	—वन (घोड़न, घोड़वन)

अन्य

मूल रूप एकवचन	(आँब)	(गर, हि॰ गला)	(आम)
” बहुवचन	(आँब)	—मन (गर मन)	(आम)
विकृत रूप एकवचन	(आंब,आँबे)		(आम)
” बहुवचन	—अन (आँबन)	—मन (गर मन)	—अन्हि (आम,आमन्हि)

स्त्रीलिंग-ईकारान्त

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	व्रजभाषा
मूल रूप एकवचन	(लड़की)	(लौंडी)	(रोटी)
,, बहुवचन	—इयाँ (लड़कियाँ)	—इयाँ (लौंडियाँ)	(रोटी)
वि० रूप एकवचन	(लड़की)	(लौंडी)	(रोटी)
,, बहुवचन	—इयों (लड़कियों)	—इयों (लौंडियों)	—इन (रोटिन)

अन्य

मूल रूप एकवचन	(ईंट)	(ईंट)	(ईंट)
,, बहुवचन	—एँ (ईंटें)	—एँ (ईंटें)	(ईंट)
वि० रूप एकवचन	(ईंट)	(ईंट)	(ईंट)
,, बहुवचन	—ओं (ईंटों)	—ओं (ईंटों)	—अन (ईंटन)

स्त्रीलिंग-ईकारान्त

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूल रूप एकवचन	(रोटी)	(छेरी)	(रोटी)
” बहुवचन	(रोटी)	[मन] (छेरी)	(रोटी)
वि० रूप एकवचन	(रोटी)	(छेरी)	(रोटी)
” बहुवचन	(रोटिन)	[मन] (छेरी)	(रोटिन)

अन्य

मूल रूप एकवचन	(ईंट)	(जिनिस)	(ईंट)
” बहुवचन	(ईंट)	[मन] (जिनिस)	(ईंट)
वि० रूप एकवचन	(ईंट)	(जिनिस)	(ईंट)
” बहुवचन	(ईंटन)	[मन] (जिनिस)	—अन्हि (ईंटन्हि)

सर्वनाम

उत्तमपुरुष

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	ब्रजभाषा
मूलरूप एकवचन	मैं	मैं, म	मैं; हौं
,, बहुवचन	हम	हम	हम
विकृतरूप एकवचन	मुझ	मुज; मेरे	मो (चतुर्थी: मोय)
,, बहुवचन	हम	हम; म्हारे	हम (चतुर्थी: हमें)
संबंध एकवचन	मेरा	मेरा; म्हारा	मेरो
बहुवचन	हमारा	हमारा; म्हारा	हमारो

उत्तमपुरुष

		अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूलरूप	एकवचन	मइ	में, मै	में, हम
"	बहुवचन	हम	हम, हम-मन	हम-नी का, हम-रन
विकृतरूप	एकवचन	मइ	मो, मोर	मोहि, मो, हमरा
"	बहुवचन	हम	हम, हमार	हम-रा
संबंध	एकवचन	मोर	मोर	मोर, [illegible] हमार, हम-रे
"	बहुवचन	हमार	हमार	हम-नी, हम-रन

मध्यम पुरुष

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
मूलरूप एकवचन	तू	तू	तू
” बहुवचन	तुम	तुम; तम	तुम
विकृतरूप एकवचन	तुझ	तुज	तो (च० तोय)
” बहुवचन	तुम	तुम	तुम (च० तुमैं)
संबंध एकवचन	तेरा	तेरा; थारा	तेरा
” बहुवचन	तुम्हारा	तुमारा; थारा	तुमारो तिहारो

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूलरूप एकवचन	तुंइ	तें, तैं	तूँ , तें
” बहुवचन	तुम, तूं	तुम, तुम-मन	तोह-नी का, तोहरन
विकृतरूप एकवचन	तुइ	तो, तोर	तोहि, तो, तोह-रा
” बहुवचन	तुम	तुम्ह, तुम्हार	तोह-नी, तोह-रन
संबंध एकवचन	तोर, तोहार	तोर	तोर, तोरे, तोहार,तोहरे
” बहुवचन	तुम्हार	तुम्हार	तोहार, तोर

प्रथमपुरुष

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	ब्रजभाषा
मूलरूप एकवचन	वह	वो	वु; वौ
,, बहुवचन	वे	वे	वे
विकृतरूप एकवचन	उस	उस	वा (च० वाय)
,, बहुवचन	उन	उन; विन	विन (च० विनैं)

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूलरूप एकवचन	ऊ, वा	उओ	ऊ, ओ
,, बहुवचन	उइ, वइ	उन, ऊओ-मन	ऊ सभ, उन्ह-का
विकृतरूप एकवचन	उइ	उओ, उओ-कर	ओहि, ओह, ओ
बहुवचन	उन	उन, उन्ह	उन्हु-का, उन्हु-करा

क्रिया के मुख्यरूप तथा कालरचना।

मुख्यरूप

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
क्रियार्थक संज्ञा	चल-ना	चलना	चलिबो
वर्तमान कृदंत कर्तरि	चल-ता	चलै	चल्तु
भूत कृदंत कर्मणि	चल्-आ	चला	चल्यो

काल रचना

प्रथमपुरुष एकवचन			
वर्तमान काल	चलता है	चलै है	चल्तु ए (है)
भूतकाल	चलता था	चलै था	चल्तु ओ (हो)
भविष्यकाल	चलेगा	चलैगा	चलैगो

मुख्यरूप

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
क्रियार्थक संज्ञा	देखब	देखब	देखल
वर्तमान कृदन्त कर्तरि	देखत, देखति	देखत, देख-तें	देखत,देखित
भूत कृदन्त कर्मणि	देखा	देखे	देख-ल, देख-लस

काल रचना

प्रथमपुरुष एकवचन			
वर्तमान काल	देखत अहै	देखत हवै	देखत-बा,देख-ता
भूतकाल	देखत रहइ	देखे रहिस	देखत रहे
भविष्यकाल	देखी. देखिहै	देख-ही, देखिहै	देखी

सहायक क्रिया

वर्तमान काल

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	व्रजभाषा
प्रथम पुरुष एकवचन	है	है	है
" बहुवचन	हैं	हैं	हैं
म० पु० एकवचन	है	है	है
" बहुवचन	हो	हो	हौ
उ० पु० एकवचन	हूँ	हूँ	हौं
" बहुवचन	हैं	हैं	हैं

वर्तमान काल

		अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
प्रथम पुरुष	एकवचन	है, अहै, बाटै	हवै, है	बा, बाटे, हा, हवे
"	बहुवचन	हैं, अहैं, बाटैं	हवैं, हैं	बाटन; हवन
म० पु०	एकवचन	है, अहै, बाटे	हवस, हस	बाट; हौवा
"	बहुवचन	हौ, अहौ, बाटौ	हवौ, हौ	बाटा, हौवा
उ० पु०	एकवचन	हौं, अहौं, बाटौं	हवौं, हौं	बटों, होईं
"	बहुवचन	हैं, अहैं, बाटैं	हवन, हन	बटी, होईं

भूतकाल

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	ब्रजभाषा
भिन्न पुरुषों में पु०, ए० व०	था	था	हो, हतो
” ” बहुवचन	थे	थे	हे, हते
सब पुरुषों में स्त्री० ए० व०	थी	थी	ही, हती
” ” बहुवचन	थीं	थीं	हीं, हतीं

भूतकाल

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
भिन्न पुरुषों में पु० ए० व०	रहौं रहै, रहै ।	रह्येउं, रहं, रहिस ।	रह्-लों, रह्-ल्, रह्-ल ।
" " ब० व०	रहन, रहौ, रहैं ।	रहेन, रह्येउ, रहिन ।	रह्-ली, रह-ला रह्-लन ।
भिन्न पुरुषों में स्त्री० ए० व०	रहौं, रहै, रहै ।	रह्येउ, रहे रहिस ।	रहलीं, रहली, रहली ।
" " बहुवचन	रहन, रहौ, रहैं ।	रहेन, रह्येउ, रहिन ।	रहल्यूँ, रहलू, रहलिन ।

सहायक क्रिया के अन्य मुख्यरूप

हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	व्रजभाषा	अवधी	भोजपुरी
होना	होना	होनो	होब	भइल
हो	होवे	होय	होइ	हो
हुआ	हुया	भयो	भवा	भइल
होगा	होगा	होयगो	होई	होई
होता	होत्ता	होतो	होत	होइत

विभक्ति या कारक चिह्न

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	ब्रजभाषा
कर्ता	ने	ने	नैं
कर्म	को	को, कू	कौं, कूँ
करण	से	से	तैं, सूँ
संप्रदान	को, के लिये	को, के खातिर	कौं, कूँ
अपादान	से	से	तैं, सूँ
संबन्ध	का, के, की	का, के, की	कौ, के, का
अधिकरण	में, पर	में, पैं	मैं, पै

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
कर्ता	—	—	—
कर्म	को,	को	के
करण	सें, तें, सेंती	लें, सें	सें, तें, सन्तें
संप्रदान	को, कहां	ला, बर	कें, खातिर, लागि, ला
अपादान	सें, तें, सेंती,	लें, सें	सें, लें
संबंध	केर, का, के, की,	के	क, कें, कर
अधिकरण	मा, पर	मां	में, पर